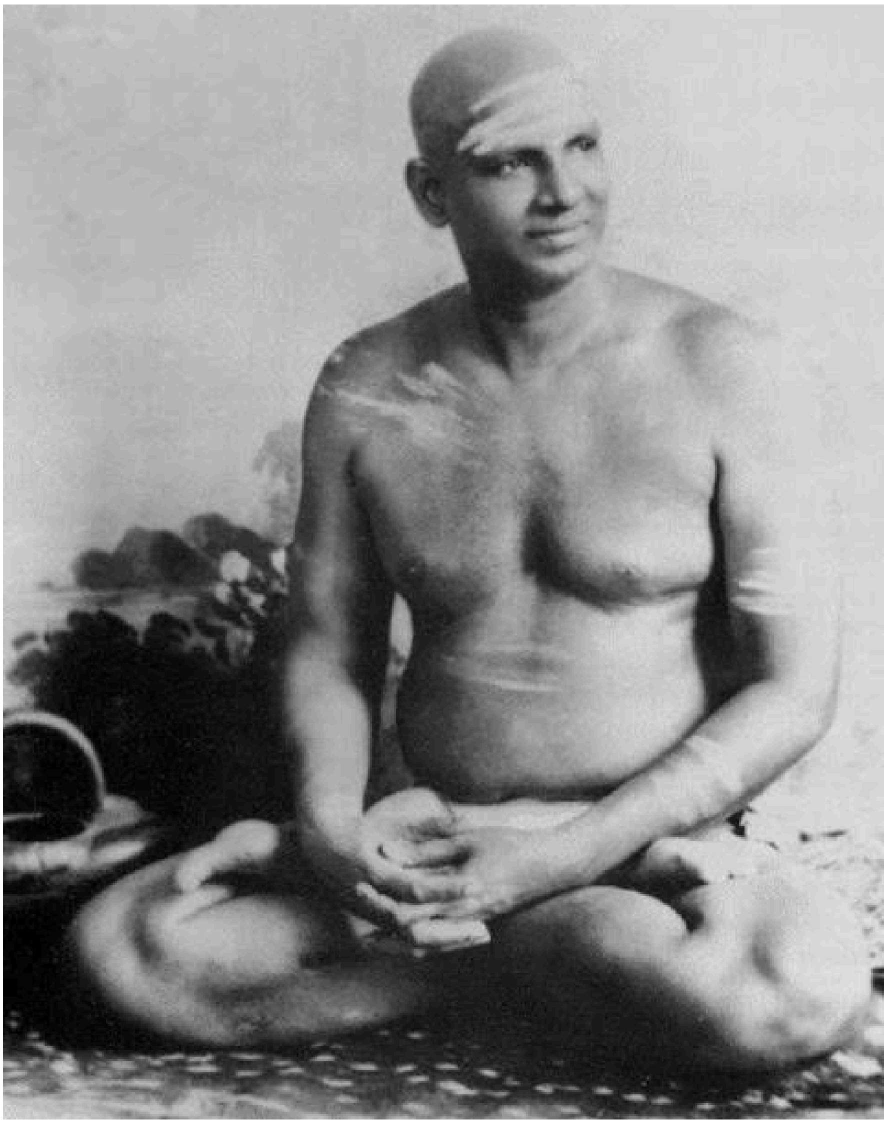
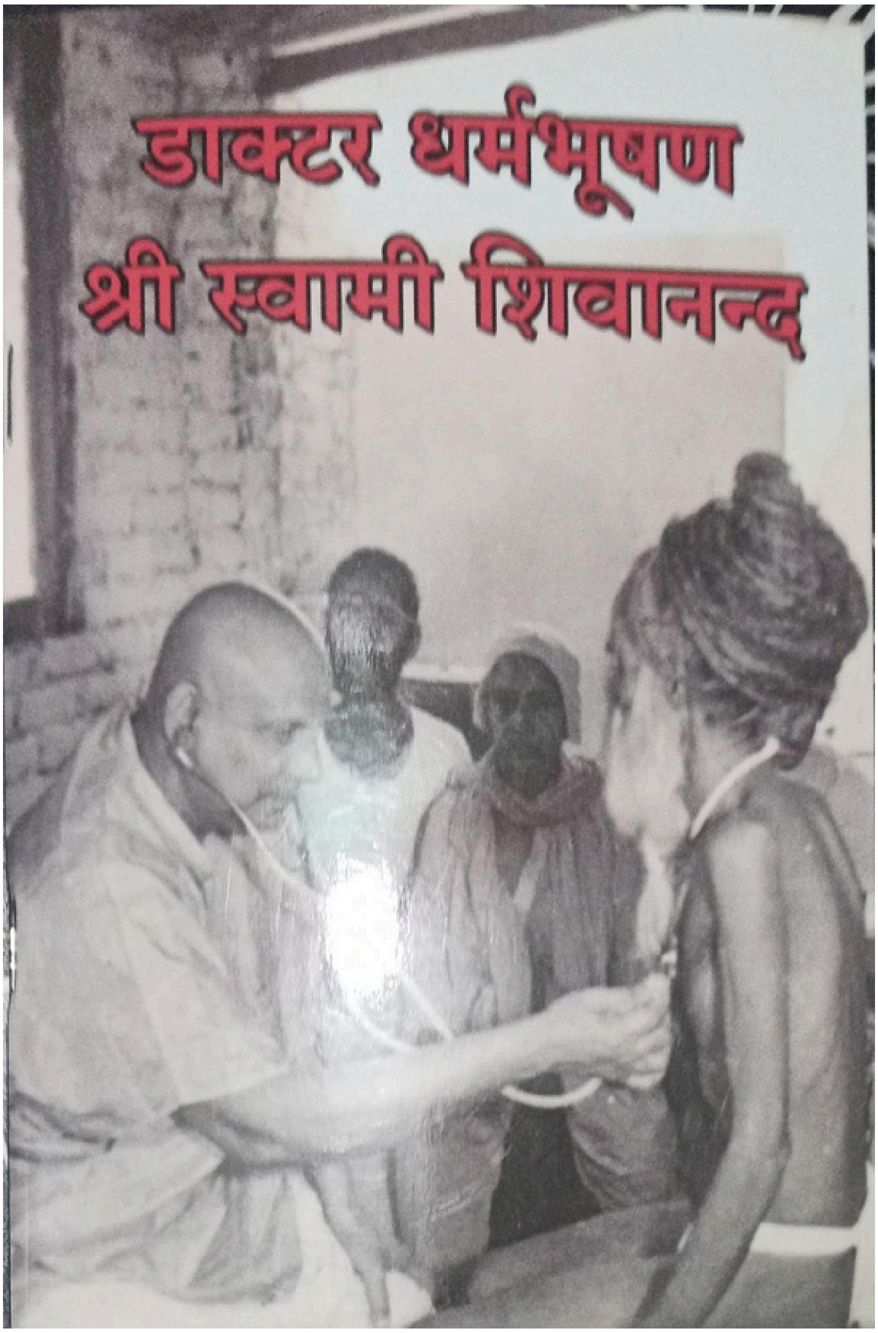


डाक्टर धर्मभूषण श्री स्वामी शिवानन्द



डॉक्टर धर्मभूषण श्री स्वार्ी शिवानंद

DR. DHARAMABHUSANAM SHRI SWAMI SIVANANDA

काशिन्दीरूपांतरण

लेखक

श्री स्वार्ी श्रद्धानन्द

भावानुवाशदका

श्री श्रीशियानंद र्ाताजी

िकाक

द डिवाइन लाइफ सोसाइटी

पत्रालय: शिवानन्दनगर २४९१९२

शजला-टिशिरी-गढ़वाल, उतत्राखण्ड (शिर्ालय), भारत
www.shivanadaonline.org.www.dlshq.org

थिर् शिन्दी संस्करण : २०१३
शितीय शिन्दी संस्करण : २०१८ (५०० िशतयाँ)

HO16

PRICE:35/-

'द शडवाइन लाइफ सोसायिी, शिवानन्दनगर' के शलए
स्वार्ी पद्मनाभानन्द िारा िकाशित तथा उन्ीं ंके िारा 'योग-वेदान्त
फारेस्ट एकाडेर्ी िेस, पो. शिवानन्दनगर, शज. टिशिरी-गढ़वाल,
उत्तराखण्ड, शपन २४९ १९२' र्ें र्ुशित।
For online orders and Catalogue visit: dlsbooks.org

टिकािकीय

श्री श्री गुरुदेव स्वार्ी शिवानन्द जी र्िाराज के ऐसे कई जीवन-चररत शलखे जा चुके िैं, शजनर्ें इनके
संन्यस्त जीवन की अनेक शवशिष्टताओं ंका शचत्रण शर्लता िै। पूवामश्रर्-जीवन-वृत्त जानने का सद्सौभाग्य िर्ें अभी
तक िाप्त निीं ंिो पाया था। केवल कुछेक को िी उसकी जानकारी री; और गुरुदेव ने स्वयं तो अपने पूवम सर्य के बारे र्ें कभी कुछ बताया िी निीं।ं

लैंशिया र्ं डाक्टर कुपुपुस्वाशर् (श्री गुरुदेव का पूवामश्रर् नार्) के साथ रिते हुए, इनके डाक्टरी-जीवन-काल र्ं लेखक को शनजी सेवा का सुअवसर िाप्त हुआ था। (कुछ वषोपरान्त इनको श्रीलंका-यात्रा ितु डाक्टर सिाब से शवलग िोना पडा था) शफर दीर्म अवशध के पश्चात् यि श्री गुरुदेव की खोज करते दिमनाथम ऋशषकेि पहुँच गये। आश्रर् र्ं रिते हुए गुरुदेव से संन्यास-दीक्षा ग्रिण कर नरशसंिअय्यर स्वार्ी श्रद्धानन्द सरस्वती नार् से अिीवामशदत हुए। तदुपरान्त आश्रर् र्ं इनका स्थायी वास रिा और ३ अगस्त १९५२ र्ं इन्ं परर् धार् की िाप्तप्त हुई।

श्री गुरुदेव के शवलक्षण व्यप्तित्व के बारे र्ं बखान करते हुए आनन्दाशतरेक र्ं स्वार्ी श्रद्धानन्द जी के नेत्रों ं से अशुरुपात िोने लगता तथा श्रोता भी िषोन्माशदत िो जाते। श्री गुरुदेव के कई भि-शिष्ों ंके िर्पूणम अनुरोध पर स्वार्ी जी से िर्ं यि पुस्तक 'शिवानन्दर्' (शिव का आनन्द) उपलब्ध हुई िै। िर्ं शवश्वास िै शक िभु-कृपा से पाठकों ंका हृदय 'शिवानन्दर्''तथा जीवन शदवय् बन जायेगा एवं 'डाक्टर धर्मभूषण' स्वार्ी शिवानन्दजी के शवशवध सद्गुणों ंके अनुिीलन के शलए भी अनुिेररत िोंगें।

भगवान आप सबको इसी जीवन र्ं योगी और ज्ञानी बनने का आिीवाद िदान करें।

प्रकाशक

डशवानन्दनगर
८-९-१९५४

लेखक की भावाशभव्यप्ति

शिर्ालय के आलोक-पुंज, ज्योशतर्मय सद्गुरु भगवान् स्वार्ी शिवानन्द जी र्िाराज के पुनीत श्रीचरणों ंर्ं अनेकानेक साष्टांग िशणपात। भाव अशभव्यि करते हुए 'दो िब्द' सर्शपमत िैं।

यि सवमर्ान्य िै शक एक उच्च अशभलाषा, र्ित्त्वाकांक्षा की पूशतम ितु र्ानव-र्न र्ं अगर अतीव उत्कण्ठा बनी रिे और सच्चे हृदय से आतुर िो कर अनन्यतापूवमक िभु से िाथमना िोती रिे तो वि अवश्यर्ेव पूणम िोती िै। जीवन र्ं शनरन्तर एकाग्रशचत्त िो केवल अपनी िुभ संकप्तित वस्तु पर व्यप्ति ध्यान करता रिे तो वि शनिःसन्देि िाप्ति िो जाती िै। यि पुस्तक उद्र्ाशित करती िै शक अपने हृदय र्ं साँजोयी र्ेरी शचर अशभलाषा कैसे पूणम िो गयी? कैसे वि शदव्य सपना साकार हुआ?

सवमशवशदत सत्य िै शक सद्गुरुदेव स्वार्ी शिवानन्द जी र्िाराज केवल पशवत्र भारत दिे र्ं िी निीं, ं अशपतु सर्ग्र शवश्व र्ं सुिशतशित एवं सुशवख्यात िैं। ये सभी स्थानों ंपर सर्ादृत-समूपूशजत एवं आराशधत िैं। आनन्द कुिीर

र्ें वास करते हुए पशतत-पावनी गंगा र्ैया तथा पवमतराज शिर्ालय की िोभा-र्शिर्ा बढ़ा रिे िैं। र्ैं तो इनका एक तुच्छ शिष् हाँ। युग-शवभूशत सद्गुरुदेव श्री स्वार्ी शिवानन्द जी र्िाराज की शदव्य सशिशध र्ें रिने का और अनोखे व्यप्तित्व के शनजी सम्पकम र्ें आने का सद्भाग्य कैसे िाप्त हुआ? यि पुस्तक इसी का शववरण देती िै।

गुरुदेव र्लेशिया र्ें डाक्टर कुप्पुस्वाशर् के रूप र्ें कायमरत थे। ये आदिम र्ानव के रूप र्ें सर्ूपूणम सर्ाज र्ें दीप्तप्तर्ान रत्न थे। उस सर्य भी इनकी जीवनिैली एक सच्चे वैरागी-संन्यासी जैसी थी। भले िी डाक्टर के रूप र्ें पाश्चात्य विभूषा धारण करते। सभी इन्ें िर्वि आदरपूवमक 'धर्मभूषण' नार् से पुकारते थे। अथामत्- कारुशणकता, संवेदनीलता एवं धर्मपरायणता से आभूशषत रत्न। ऐसे शवरले र्िान् सन्त के शनकि सम्पकम र्ें आने पर िी इनके उतूकृष्ट आदिम जीवन का अद्भुत पररचय िाप्त हुआ। र्ैं सोचता हाँ शक अपने पूवमजों ंके र्िान् सुकृतों ं के कारण िी र्ुझे इनका शदव्य साशिध्य शर्ल पाया। इनके सशिकि रिते हुए र्ुझे धर्ोशचत जीवन-यापन करने का र्ागम-दिमन िाप्त हुआ।

परर् सत्य के ज्ञानिाप्त करने की उत्कि अशभलाषा का तथा िापंशचक जीवन के पररत्याग की भावना का र्ेरे हृदय र्ें जागृत िो कर शनरन्तर बढ़ते रिना, वसुतुतिः इनके िी आध्याप्तिक शनदेिों ंका सुपररणार् िै। र्ेरे हृदय र्ें उठी र्ुर्ुकुषुत्व की ज्वाला को गुरुदेव क्षीण निीं ंिोने देना चािते थे। उस सर्य भी इनकी जीवनचयाम ऐसी िभाविाली थी शक सम्पकम र्ें आने वाले सब लोग इन्ें र्ूशतमर्न्त धर्मपरायणता और सदाचाररता र्ानने लगे थे। शंकंशचन्मात्र भी स्वाथम भावना न रखते हुए सबकी सेवा-सिायता करने का व्रत इन्ोंने ले शलया था।

सब कायम करते हुए भी सदा सब तरि, सब तरफ से अनासि, शवरि तथा शनशलमप्त िी रिते। र्ानवता के कल्याण िेतु इन्ोंने अथक पररश्रर् शकया। श्रद्धा और िेर्पूवमक र्ैं इनके स्वभावि–वृशत्त, शिया-कलाप इत्याशद पर ध्यान देते हुए िसि िोता। इनका िते्येक कायम-व्यविार िंसनीय था। ये िेर् और करुणा की साकार र्ूशतम रिे तथाशप इनकी अनुिाशसत संचालन-व्यवस्था सवमशनयन्ता परर्ाा की भााँशत िै। ये सवमसर्थम िैं।

इनकी दानिील िवृशत्त को देख कर लगता िै शक ये कशलयुग के कणम (र्िाभारत के पात्र) िैं। श्रीलंका की यात्रा िेतु जब र्ैं र्लेशिया से शवदा हुआ, इनका पाचन र्नोिारी स्वरूप सदा-सवमदा र्ेरे अन्तचमकुषुओं ंके सर्क्ष रिता। शपछले पच्चीस वषों से र्ैं अनेक िेर-नगर र्ें रिा, र्ेरी अनुभूशत िै शक इनके िारा र्ेरे हृदय र्ें परर् आनन्द का जो बीजारोपण हुआ था, वि अंकुररत िोने लगा और सर्ुशचत अवसर पा कर िसुफुशित िो उठा। अन्ततिः र्ैं संन्यास आश्रर् र्ें दीशक्षत िोने योग्य बन पाया। यिी र्ेरी शचर अशभलाषा, शजससे २५ वषों से शदन-रात हृदय र्ें साँजोये था, आप्तखरकर पूणम िो गयी। एक सपना वास्तशवकता र्ें पररणत िो गया। र्ेरा शचत्त िशषमत एवं आनप्तन्दत िो उठा। िसिता का पारावार निीं।ं इसी िसंग का पुस्तक र्ें शनरूपण हुआ िै।

इस पुस्तक को शलखने का ियोजन भी र्ैं आपको बताना चािता हाँ। श्रद्धास्पद गुरुदेव के शिष् श्री स्वार्ी नारायणानन्द एक शदन श्री गुरुदेव के पूवामश्रर्-जीवन के शवषय र्ें कुछ जानने की उत्कण्ठा ले कर र्ेरे पास आये। र्ेरे िारा यि जीवन-वृत्त सुन कर िसितापूवमक उन्ोंने किा - "ओि! शकतना िी अच्छा िोगा अगर यि वृत्तान्त सबको उपलब्ध करा सकें। यि र्ित् कायम सबके शलए शिक्षािद एवं िेरणािद िोगा। कृपया आप इसे पुस्तक-रूप र्ें अवश्य शलखें।" इनके इस िेर्पूणम आग्रि को र्ानते हुए र्ैं पुस्तक-रचना के शलए उत्साशित हुआ। पाणुडुशलशप पूणम िो जाने पर र्ेरे शर्त्र श्री एर्. रार्रत्नर् (स्वार्ी षणुमुखानन्द) ने सभी अध्यायों ंको सर्ुशचत रीशत से शिद्ध शकया। स्वेच्छापूवमक यथासर्य दी गयी इस र्दद के शलए र्ैं उनको धन्यवाद देता हाँ।

योगी श्री िुद्धानन्द भारती जी को िाशदमक कृतज्ञता व्यि करने िेतु र्ेरे पास योग्यता अथवा कोई िब्द निीं ंशजन्ोंने आशद से अन्त तक पुस्तक की पाणुडुशलशप का र्नोयोगपूवमक अध्ययन शकया। इसका संिोधन एवं सम्पादन-कायम भी शकया। र्िान् योगी िुद्धानन्द भारती िारा पुस्तक का र्ूल्यांकन, सर्थमन शर्लने से र्ैं िोत्साशित

हुआ। इनके ारा अशपमत इस सर्योशचत सियता को रैं् भुला निीं ंसकता। इन्ोंनें अपनी बेजोड, धुंर तशर्ल भाषा रें् पुस्तक की भूशर्का भी शलखी ि। इनके ारा शदया गया ीषमक 'डाक्टर धर्मभूषण' शवषय के अनुरूप ि, सरुुपयिु ि। इनके शवचारानुसार यि लरुु पुस्तक उते्प्रेरणा ि-इनके ारा श्री गुरुदेव के शवसूतृत वृिद जीवन-वृत्त की रचना के शलए। ८ जुलाई की राशत्र १ बजे तक बैठ कर इन्ोंनें पुस्तक की िस्तावना शलखी, शजससे गुरुदेव के शित इनकी असीर् श्रद्धा-भावना तथा इस पुस्तक के िशत इनकी िीशतपूणम लगन उल्लेखनीय ि। रुझ जैसे नगण्य साधारण व्यप्ति के शलए उनकी यि सियता श्लार्नीय ि।

अपने सद्गुरुदेव का अगाध िर् तथा रे्री तीव्र अशभलाषा के फलस्वरूप यि पुस्तक समू्पूणम ि पायी ि। इसे रैं् श्री गुरुदेव के पादपद्मों ंरें् शवनीत भाव से सर्शपमत करता हाँ। सोत्सिा ाशदमक ाथमना सशित आकांक्षा करता हाँ शक इनके कृपापूणम आिीवामद रुझे तथा रे्रे जैसे अन्य रुरुकुषु-शजज्ञासु जनों ंको भी िाप्त िों।ं

सबकी सेवा रें्
श्रद्धानन्द

श्री स्वारी् श्रद्धानन्द

सद्गुरुदेव श्री स्वारी् शिवानन्द जी पूवामश्रर् जीवन र्ें र्लेशिया र्ें एक िख्यात डाक्टर थे। स्वारी् श्रद्धानन्द इनके साथ ि शनजी सेवा-सियता र्ें रि और इनके र्शनि शर्त्र बन गये थे; तभी आज िर्ें यि कुछ नवीन जानकारी िदान कर सके िैं।

िर्ें ज्ञात हुआ िै शक गुरुदेव पूवामश्रर् र्ें भी अनेक सद्गुणों ंसे सम्पि थे। ये यथाथमतिः शनिःस्वाथमपरक परोपकारी थे। शनशलमप्त, तिस्थ तथा शविेषतया संवेदनिील थे। इनके हृदय र्ें अगाध िेर् था। ये सबकी अथक सेवा करते। सदाचाररता एवं धर्मपरायणता के र्ागम पर चलने वालों ंके शलए ये र्ागमदिमक थे। इस पुस्तक के लेखक स्वारी् श्रद्धानन्द अत्यन्त भाग्यिाली रिे, शजनें् एक पुण्यिाा, सन्तहृदयी डाक्टर कुपुपुस्वाशर् का साशिध्य तथा व्यप्तिगत सेवा का सुअवसर िाप्त हुआ। इस िकार यि डाक्टर सिाब की सोत्सिा र्नोयोगपूवमक सेवा के फलस्वरूप इनके सुहृद बन गये थे। जब स्वारी् श्रद्धानन्द को श्रीलंका के कशदरकार् (भगवान् काशतमकेय जी का सुिशसद्ध तीथमस्थल) के पशवत्र र्प्न्दर दिमन की इच्छा जाग्रत हुई तो गुरुदेव की सेवा-सशिशध से वंशचत िोना पडा।

यि श्रीलंका र्ें थे, तभी गुरुदेव र्लेशिया छोड कर आ गये थे। सर्ूपूणम भौशतक कायमकलापों, ं शचशकत्सा व्यवसाय इत्याशद से सम्बन्ध-शवचे्छेद कर शिर्ालय की ओर प्तखंचे चले आये और यिााँ आ कर संन्यास आश्रर् र्ें दीशक्षत िो गये। तत्पश्चात् एकान्त-नीरव स्थान र्ें अकेले रिते हुए आध्याप्तिक साधना र्ें जुि गये। उधर लेखक को गुरुदेव के शवषय र्ें जानने का कोई उपाय निीं ंसूझ रिा था। कोई रास्ता निीं ंशदखायी दे रिा था। शफर भी कशदरकार् र्प्न्दर के भगवान् र्ुरुगन (भगवान् काशतमकेय) की कृपा तथा अपने अचे्छे और अद्भुत साप्तत्त्वक स्वभाव के पररणार्स्वरूप इनें् अपने लौशकक जीवन के िशत पूणम शवरप्ति िो गयी, जो शदनोंशदन बढ़ती गयी और संसार से पूणम त्याग के सर्ुशचत सर्य की आतुरता से ितीक्षा करने लगे।

जैसे-जैसे सर्य बीतता गया, इनका वैराग्य िबल से िबलतर िोता गया और सन् १९४१ र्ें पशवत्र गंगातिट पर पहुाँच िी गये। उस सर्य तक इनें् यि पता चल चुका था शक डाक्टर कुपुपुस्वाशर् अब श्रदे्धेय सद्गुरुदेव स्वारी् शिवानन्द जी के रूप र्ें आनन्द कुिीर, ऋशषकेि र्ें शनवास करते िैं। यिााँ पहुाँच कर इनको र्िान् सन्त के पुण्य दिमन-लाभ िाप्त हुआ। श्री गुरुदेव के श्रीचरणों ंर्ें दण्डवत् कर, िणत भाव से संन्यास-दीक्षा के शलए िाथमना की। उस सर्य इनकी िाथमना को स्वीकृत निीं ंशकया गया। इनें् दशक्षण भारत र्ें अपने र्र वापस लौिना पडा। इनकी सांसाररक र्ोिासप्ति शदन-ब-शदन कर् िोती गयी। सन् १९४३ र्ें पुनिः आनन्द कुिीर र्ें आये और शफर गुरुदेव से संन्यास-दीक्षा की याचना की। इस बार भी अस्वीकृशत िी शर्ली। इनें् वापस जाना पडा। अन्ततोगत्वा सन् १९४७ र्ें आये, बडी शवनम्रतापूवमक संन्यास-दीक्षा की याचना–िाथमना की तो पूजनीय गुरुदेव ने पशवत्र संन्यास आश्रर् र्ें दीशक्षत कर शचर–तीशक्षत संन्यास की अशभलाषा को पररपूणम कर शदया और यि स्वारी् श्रद्धानन्द नार् से अशभशित हुए। तदुपरान्त आश्रर् र्ें श्री गुरुदेव के श्रीचरणों ंर्ें स्थायी वास रिा। सन् १९५२ र्ें तीन अगस्त को अपने र्िान् गुरुदेव के श्रीचरणों ंर्ें सर्ाशधस्थ िो गये।

िर् स्वारी् श्रद्धानन्द जी के अतीव आभारी िैं। इनोंनें गुरुदेव के र्लेशिया-वास के जीवन पर िकाि डाला िै। पूणम आिा िै शक यि पुस्तक सबके शलए अत्यन्त लाभिद, बोधिद एवं िेरणािद शसद्ध िोगी।

िर् स्वारी् शनर्मलानन्द जी का भी आभार व्यि करते िैं शजनोंनें स्वारी् श्रद्धानन्द को इनके शनजी अनुभवों ंको पुस्तक का रूप देने की िेरणा दी। लेखन-कायम के सर्य भी िोत्सािन देते रिे। योगी श्री िुद्धानन्द

भारती को इस पुस्तक की िस्तावना शलखने की िाथमना भी इन्ोंनें िी की थी। पुस्तक–िकान के सर्य सवेक्षण कायम, रुशच के साथ सावधानी एवं सजगतापूवमक शकया तथा अन्य कई सेवाएँ अनेकशवध रूप से अशपमत करते रिे।

िकाशक

एक अनुभव

अपने गुरुभाई स्वार्ी श्रद्धानन्द सरस्वती िारा रशचतार धर्मभूषण' पुस्तक र्ुझे पढ़ कर सुनायी गयी। यि जान कर ि षम हुआ शक अपने गुरुदेव श्री स्वार्ी शिवानन्द जी के पूवामश्रर् जीवन के बारे र्ें वि शलखी गयी िै; शजससे शसद्ध िोता िै शक यि उक्ति 'िोनिार शवस्वान के िोत चीकने पात' अक्षरिः सत्य िै, गुरुदेव पर पूणमतः चररताथम िोती िै।

स्वार्ी श्रद्धानन्द के कथनानुसार उतूकृष्ट आध्याक्तिक शवशिष्टताएँ जो श्री गुरुदेव र्ें अब देखने को शर्ली िैं, ये सब इनके डाक्टरी जीवन र्ें भी दिमनीय थीं।ं ये सब जान कर र्ुझे भी कुछ र्िनाओं ंका स्मरण िो आया िै, र्ैं संक्षेप र्ें उन्ें िस्तुत करता हाँ-

सन् १९२८ के अगस्त रि् र्े र्ेरे स्वगीय शपता जी, जो पालरि् शजले के अन्तगमत रार्नाथपुरर् गााँव र्े
न्ति-शचत्त से पेंनि पर ि़ी अपना सन्तोषी जीवन व्यतीत कर रिे थे, एक शदन अचानक र् छोड कर विााँ से शनकल पडे और रिा र्े शबना किीं ंरुके सीधे ऋशषकेि र्े स्वगामश्रर् पहुाँच गये। एकाएक उन्ें सांसाररक जीवन से शवरप्ति का अनुभव िोने लगा था। वि इतनी तीव्र थी शक अपनी बढ़ती आयु (७० वषम) तथा उत्तर भारत के र्ौसर् और जलवायु इत्याशद का भी ध्यान न रिा और शनकल पडे यात्रा पर। ध्यान देने योग्य बात तो यि िै शक सवमिथर् स्वेच्छापूवमक उन वयोवृद्ध को सिायता को जो आगे आये, वि थे युवा स्वार्ी शिवानन्द जी। शपताश्री तो स्थानीय भाषा से अनशभज्ञ थे। अपने िशत करुणा और िेर्पूणम व्यविार को देख कर शपताश्री अपनी िशतापूणम उच्च पदवी का गवम, िभावी, ठाि बाि की जीवनिैली इत्याशद सब-कुछ भुला कर िेर्ावेग से इनके श्रीचरणों ंर्े दण्डवत् शगर पडे; अश्रुरुपूररत नेत्र, रोर्ांशचत िरीर और था गद्गद कण्ठ।

उसी सर्य से दोनों ंपरस्पर शर्त्रवत् रिने लगे। शपताश्री के शनवास िेतु स्वगामश्रर् र्े इन्ोंने पूणम व्यवस्था कर दी थी। कुछ सर्य बाद र्ेरी र्ाताश्री भी स्वगामश्रर् पहुाँच गयीं।ं उनकी भी सुख-सुशवधा, आरार् का पूरा-पूरा ध्यान गुरुदेव ने िी रखा था। गुरुदेव का दया और स्ेिपूणम आशतथ्य पाते हुए, दोनों ंकई र्िीने स्वगामश्रर् र्े रिे। चिे आने पर बाद र्े जब शपताश्री र्ेरे पास रिे तो उन्ोंने अपने स्वगामश्रर्-वास के अनुभव को िकि करते हुए किा था-"स्वार्ी शिवानन्द जी अवस्था र्े अभी युवा िैं। ये र्लेशिया र्े डाक्टर थे। संन्यासी िो िोने के बावजूद सेवा-भाव से आवश्यकतानुसार शचशकत्सा-कायम अब भी जारी रखा हुआ िै। एक रानी साशिबा िारा भेंट र्े धनराशि शर्लने पर 'सत्य सेवाश्रर्' के नार् से एक छोटा शचशकत्सालय का खचम चलाते िैं। इसर्े आश्चयम निीं ंशक यि एक योग्य डाक्टर िैं। धर्मपरायणता की साकार िशतर्ा िैं। इनके शवचार और कथनी-करनी र्े कोई अन्तर निीं।ं इनके जीवन का आधार सत्य-व्रत िै। इनके जैसा असाधारण जीवन अशत दुलमभ िै। अवश्यर्ेव यि एक शदन र्िान् शदव्य शवभूशत के रूप र्े िख्यात िोंगे।"

उस सर्य किे वचन, और उनका अनुर्ान पूणमतिः सत्य शसद्ध िो गया िै। इन र्िान् शवभूशत सद्गुरु श्री स्वार्ी शिवानन्द जी से संन्यास आश्रर् र्े दीशक्षत िोने का र्ुझे अशर्त सौभाग्य िाप्त हुआ िै।

स्वामी सदानन्द सरस्वती

आनन्द कुिीर
१-८-१९५१

स्तावना

आशदगुरु श्री िंकराचायम वेदान्ती थे, तथा श्री अप्पय दीशक्षतार शसद्धान्ती। स्वार्ी शिवानन्द जी वेदान्त और शसद्धान्त दोनों ं का िी संयुि साकार रूप िैं। श्री िंकराचायम जी ने अपने ग्रन्ों ं तथा स्तोत्रों ं की रचना तत्कालीन
लोकशिय भाषा संसृकत र्ें िी की थी। श्री अप्पय दीशक्षतार ने भी संसृकत भाषा का िी ियोग शकया। वतमर्ान सर्य र्ें इंर्ग्लि शवश्व भाषा का रूप ले चुकी िै। स्वार्ी शववेकानन्द, स्वार्ी रार्तीथम, र्िात्मा गान्धी तथा जविारलाल नेिरु ने इसी भाषा र्ें अपनी शवचाराशभव्यप्ति की थी।
र्िारे स्वार्ी श्री शिवानन्द सस्वती अन्तरामष्टरीय भाषा इंर्ग्लि र्ें िी अपना शदव्य सन्देि दूर-सुदूर देिों ंर्ें पहुाँचाने र्ें सफल हुए िैं। इनकी ज्ञान-गंगा के धारा-िवाि से अनेक जीवात्माओं ंका पोषण हुआ िै। अध्यात्म ज्ञान, योग-शवज्ञान एवं शदव्य जीवन के रूप र्ें स्वार्ी शिवानन्द जी सुिशसद्ध हुए िैं। इनके िारा सम्पूणम र्ानवता र्ें असीर् करुणा का संचार हुआ िै।

इनका िब्द-चयन िभाविाली, शितिद तथा िेर्-अनुग्रि से ओतिोत िोता िै; भाषािैली सुस्पष्ट, सरल और बोधगम्य िै। इनका शदव्य व्यप्तित्व, तेजोर्य स्वरूप दीप्त कुण्डशलनी िप्ति से िदीप्त रिता िै। इनकी ज्ञानपूणम र्िान् रचनाओं ंको देखने र्ात्र से िी र्ुझे अत्यन्त िसन्नता िोती िै। अगर सोत्साि भप्ति-भाव से पढ़ने-सुनने र्ें शनर्ग्न िो जायें, तो परर् आनन्द से िफुप्तल्लत िो उठते िैं, तब र्ेरा हृदय शिवानन्द जी से ऐक्य िाप्त कर लेता िै। िर् दोनों ंध्यानाभ्यास के शलए एक िी वाशिका र्ें शवचरण करते िैं। ध्यान का स्तर दोनों ंका एक िी िै। इस िकार िशतशदन इनके वचनार्ृत-पान का सौभाग्य िाप्त िोता िै। इनके सुतुत्य एवं गुणगान र्ें र्ेरा िर शदन साथमक िोता िै।

अंग्रेजी तथा तशर्ल भाषा र्ें शवसृतृत रूप से शिवानन्द जी का जीवनवृत्त शलखने की र्ेरी योजना िै शजसकी अशभिेरणा र्ुझे इस लघु पुस्तक 'डाक्टर धर्मभूषण' से शर्ली िै।

शिवानन्द जी का कारुण्य, हृदय की शविालता, समूपूणम तीव्र वैराग्य, अनासप्ति एवं ऱ्ानवता के ि शत संवेदनीलता इत्याशद सद्गुणों ंके अशरि् िभाव एवं आनन्दिद अनुभव के फलस्वरूप श्री स्वाऱ्ी श्रद्धानन्द ने इस पुस्तक की रचना की िै। स्वाऱ्ी श्रद्धानन्द का व्यापार-व्यवसाय र्लेशिया और श्रीलंका ऱ्ें फैला हुआ था। इनें् गृिस्थ जीवन के उतार-चढ़ाव, षिम-शवषाद आशद कई खट्टे-ऱ्ीठे अनुभव हुए। सद्गुरु शिवानन्द जी की ऱ्िती कृपा से िी यि फले-फूले। अब यि शिवानन्द जी के िधान शिष्ों ंऱ्ें से एक िैं।

अपने सद्गुरु की शदव्य र्िऱ्ा-उदारता के शवषय ऱ्ें केवल शलखने का ऱ्ित् कायम िी निीं ंशकया, बप्ति उसे छपवाने का उत्तरदाशयत्व विन करने ऱ्ें इनकी श्रद्धा-भप्ति और िेऱ् सवोपरर िै। यि पुस्तक इन ऱ्िान् शवभूशत का दिमन कराती िै जो यथाथम ऱ्ें जीवन के िारम्भ से िी उदारहृदयी, दानिील, धर्ऱ्मचारी, और अध्याि-रत रिते हुए रत्न रूप से शवभूशषत रिे। इसशलए इस पुस्तक का िीषमक 'डाक्टर धर्मभूषण' पूणमतया सरुपयिु िै। रुझे आिा िी निीं,ं पूणम शवश्वास िै शक शिवानन्द जी के अनुयायी, शिष् तथा अन्य भि गण इसे आदरपूवमक स्वीकार कर लाभ उठायेंगे।

शिवानन्द सवमव्यापक िैं, सवमत्र शवद्यऱ्ान िैं। इनकी उपप्तस्थशत यत्र-तत्र-सवमत्र िै। जिााँ-जिााँ 'द शडवाइन लाइफ' पशत्रका जाती िै; ये भी साथ िी जाते िैं। अपना अनुभव बताता हाँ। जब कभी इनकी पुस्तकें िाप्त करता हाँ, इनके साथ जैसे स्वाऱ्ी जी का भी िुभागर्न िोता िै तथा शफर ऱ्ेरे ध्यानाभ्यास के सर्य आिैक्य का रूप ले लेते िैं। यि अध्याि-गगन के सूयम िैं; जो उत्तर शिऱ्ालय ऱ्ें उशदत िो, अपनी शदव्यर्ििा-रप्तियों ंसे पूरे भारत दि को ज्योशतत करते िैं; िबोशधत करते िैं।

र्िाि्ा गान्धी ने जैसे दि को स्वाधीनता शदलायी; िऱ्ारे स्वाऱ्ी शिवानन्द जी ने जीवािाओं ंको रुप्ति शदलायी। र्िाि्ा गान्धी ने स्वतन्त्र दि ऱ्ें राष्टरीय झण्डा फिराया, स्वाऱ्ी शिवानन्द जी ने आिैत शसद्धान्त का ध्वज फिराया। भारत की राजधानी शदल्ली ऱ्ें िजातन्त्र गणराज्य स्थाशपत हुआ; शिवानन्द आश्रऱ् ऱ्ें अनन्त कल्याण-गुण-राज्य िशतशित हुआ। यिााँ योग का राज्य िै। योग-साम्राज्य जो उत्तरोत्तर िगशत ऱ्ागम पर िै। र्लेशिया ऱ्ें रिते हुए डाक्टर कुपुपुस्वाशऱ् िारीररक रोग-शनवारक डाक्टर थे, जड रोग वैद्य थे, अब वि शिवानन्द जी के रूप ऱ्ें ऱ्ानव को जन्म-र्रण के चक्कर से रुि कराने वाले **डदव्य भवरोग वैद्य** िैं।

भारत एक आध्याप्तिक दि िै, शजसऱ्ें शदव्य जीवन की िधानता िै। इसऱ्ें योग-शवज्ञान िधान िै। इस दि की अन्तिःर्प्ति का स्रोत कुण्डशलनी जागरण िै (जो ब्रह्माकारी िै)। इस दि के कला-कौिल ऱ्ें शदव्यता की सुगन्ध सऱ्ायी हुई िै। ऋशष-रुशनयों ंके अध्याि-ज्ञानालोक की उज्वल शकरणों ंऱ्ें इस दि की सभ्यता-संसृकृशत का अप्तस्तत्व शवद्यऱ्ान िै। यिााँ के शनवासी वेदाध्ययन के अभ्यासी िैं। ब्रह्मािैक्य की िाप्तप्त का साधन, अध्याशवद्या (ब्रह्मशवद्या) िी िै जो भारत का गौरव िै। जैसे चीनी की ऱ्त्ता उसकी शठर्ास से िै, नर्क की सत्ता उसके नर्कीन स्वाद ऱ्ें िै; इसी िकार भारत दि की ऱ्िनता, गररऱ्ा उसके अध्यार्ििा ऱ्ें िै, आध्याप्तिक िप्ति ऱ्ें िै।

आज शवश्व ऱ्ें शवध्वंस और शवनाि का नृत्य िो रिा िै। आततायी के जर्न्य अपराध का आतंक, नाप्तस्तकता की उद्दण्डता, धन-सम्पशत्त का शर्थ्या अशभर्ान, िारीररक भोग-शवलास का बोलबाला, नयी बस्ती-स्थापकों ंकी लोभ-वृशत्त, राजनैशतक चालबाजी इत्याशद से चहुाँओर तबािी र्ची हुई िै। इस अज्ञान-अन्धकार से शनकलने का ऱ्ागम स्टेशलन, िूरैन और चशचमल जैसे भला क्या शदखा सकते िैं? ज्ञान रूपी आलोक के शलए पथ-िदिमन तो कर सकते िैं सन्त-र्नीषी जन-आशद िंकराचायम, वागीि (नायनार सन्त) रार्शलंग इत्याशद। सन्तों,ं ऋशष-रुशनयों ंऱ्ें त्याग-वैराग्य की िप्ति और साथ्यम िोती िै। सर्थम सन्त रार्दास ने बीर शिवाजी को केसररया ध्वज शदया था, शजसका आिय था-अनासप्ति और वैराग्य का आश्रय। **सन्त-महात्मा डदव्य चेतना तथा आत्मज्ञान के धनी होते हैं, जो मानव को डदव्य बना कर समाज में पडवत्रता का संचार कर सकते हैं; मानव**

को इच्छा और कामनाओं ंकी दासता से डववेक-ज्ञान द्वारा मुक्ति डदला कर आत्म-स्वराज्य की आनन्दानुभूडत का साधन-बल प्रदान कर सकते हैं। ऐसे हैं वततमान समय की युग-डवभूडत-स्वामी डशवानन्द जी।

जाज्वल्यर्ान अध्यिा-ज्योशत के रूप र्ें स्वार्ी शिवानन्द जी युग-युग तक अर्र रिं!

शदव्य संचेतना शनत्य-शनरन्तर अर्र रि!

शदव्य जीवन संर् की जय ि‍ो!

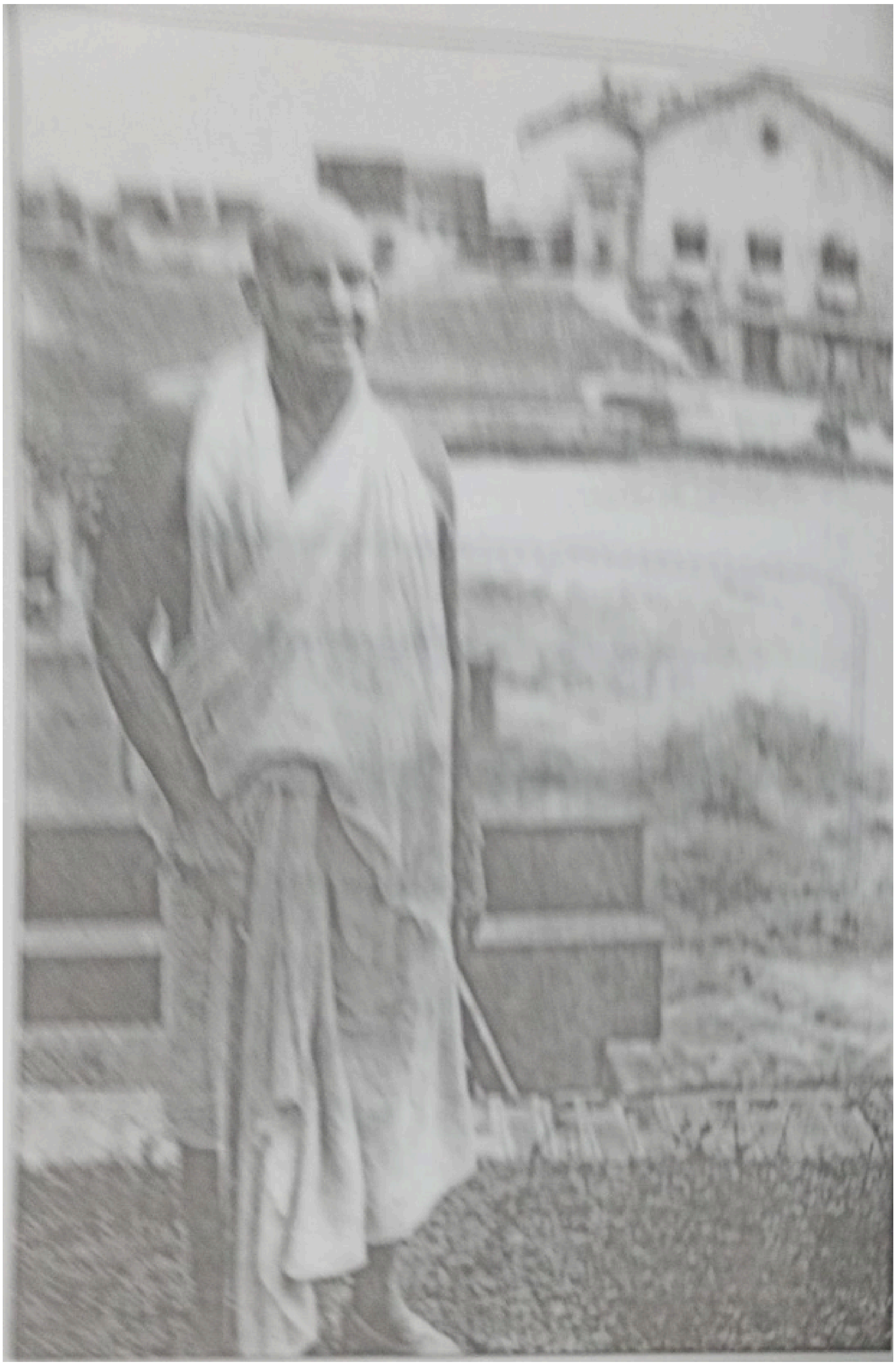
सदा-सवमदा जय ि‍ो!

८-७-१९५१ **शुद्धानन्द भारती**

अनुक्रमडिका

डाक्टर धर्मभूषण

श्री स्वार्ी शिवानन्द



अध्याय १
'धर्मभूषण' डाक्टर कुपुपुस्वाशर् से िथर् शर्लन

'धर्मभूषण' डाक्टर कुपुपुस्वाशर् से रे्रा िथर् शर्लन एक पावन सान्ध्य बेला रे् हुआ। शसंगापुर के डाक्टर ररु्नाथ अय्यर ने उनसे शर्लने के शलए जोिोरबिारु रे् ग्रीन ररिय के रे्शडकल िॉल रे् रु्झे भेजा। जब रै् विााँ पहुाँचा तो डाक्टर कुपुपुस्वाशर् निीं थे। उनसे शर्लने की ितीक्षा रे् विीं बरार्दे रे् चिल-कदर्ी करने लगा। सायं ६.३० बजे का सर्य था, पैंि-किो और पगडी पिने सुगशठत, सुडौल, र्ध्यर् आयु के एक तेजस्वी र्िानुभाव को रै्ंने अपनी ओर आते देखा, शजनका व्यशित्व शचत्ताकषमक था। यिी थे डाक्टर कुपुपुस्वाशर् ।

रु्झे देख कर उन्िोंने बैठने के शलए किा और शफर र्न्द स्वर रे् पूछने लगे- 'आप कौन िैं? किााँ से आये िैं?"

उत्तर रे् रै्ंने किा- "शसंगापुर के डाक्टर ररु्नाथ अय्यर ने रु्झे यिााँ आपके पास भेजा िै।"

कुपुपुस्वाशर्- "आपने ररु्नाथ अय्यर का शजि शकया िै क्या? इनके र र रे् सब कुशलपूवमक िै न?"

रै्ंने किा- "जी िााँ। सब कुशल-र्ंगल िै।"

तत्पश्चात् डाक्टर सािब रु्झे अपने र ले गये, जो रे्शडकल िॉल के पीछे िी था।

विााँ पहुाँच कर इन्िोंने थोडा आरार् शकया। शफर ये अपनी दैशनक सन्ध्या-पूजा करने चले गये। रै् पास के कर्रे रे् बैठा रिा। इसके बाद िर्ने साथ रे् बैठ कर राशत्र का आिार शलया। जब सोने का सर्य हुआ तो ये रु्झे अपने साथ िॉल रे् ले गये। इनके सोने की तैयारी का ढंग रु्झे बडा शदलचस्प लगा। एक साधारण-सी दरी और तशकया ले कर ये तो फिम पर िी लेि गये। इन्िें ऐसा करते देख रै् भी अपना शबस्तर छोड एक कपडा शबछा कर जर्ीन पर िी सोने लगा। तब डाक्टर सािब ने चारपाई की ओर संकेत करते हुए किा- "यि आप िी के शलए खाली रखी िै, अतः इस पर सोइए।" शवप्तस्मत िो रै् सोचने लगा-'जब डाक्टर स्वयं फिम पर सो रिे िैं तो भला रै् कैसे ऊपर सो सकता हाँ?' तब रे्री आन्तररक भावनाओं को सर्झते हुए उन्िोंने किा - "आप यिााँ के र्ौसर्, जलवायु और वातावरण के अभ्यस्त निीं िैं। जब तक इनके अनुकूल रिने की आदत निीं िो जाती, तब तक आपको सावधानीपूवमक बहुत सचेत व सतकम रिना िोगा। रै् तो अब इस नये देि के र्ौसर्-जलवायु इत्याशद का अभ्यासी िो गया हाँ।" ऐसा सुन कर रै्ंने इनके सुझाव अनुसार िी शकया।

अगले शदन सुबि इन्िोंने अपने िाथों से कॉफी बनायी। स्वयं पीने से पिले कॉफी का एक कप रु्झे भी शदया। रै्ंने इन्िें बताया शक कुछ सर्य से कॉफी पीना छोड रखा िै। इन्िोंने कारण पूछा तो रै्ंने बतलाया- "एक बार अपने शर्त्र के साथ कलकत्ता से रंगून सरु्द्री जिाज िारा जा रिा था। कॉफी बनाने के सभी साधन अपने साथ ले गये थे। रास्ते रे् कॉफी पीने का सर्य िो जाने पर कॉफी बना कर दोनों ने उसका सेवन शकया। कलकत्ता से ६० र्ील की दूरी पर जिाज पहुाँचा िी था शक एकाएक (सरु्द्री) तूफान आया और साथ िी भारी बवण्डर भी उठने लगा। तब कई याशत्रयों का जी शर्चलाने लगा तथा कई उल्टी (कै) करने लगे। उनकी दुदमिा देखते हुए िर्ारा भी विी िाल िो गया। चारों ओर कॉफी की िी दुगमन्ध फैलती जा रिी थी। इस र्िना के बाद से रै्ंने कॉफी पीना छोड

शदया।" अपनी सारी बात रैंने इन्ें सुना तो दी; शकनुतु नर ें शवचार आया शक डाक्टर सिाब के स्ेनिपूणम आग्रि को अस्वीकृत करना सवमथा अनुशचत िै। इनका किा ऱानते हुए रैंने कॉफी पीना िुरू कर शदया।

र्ध्याह्न भोजन के शलए जब डाक्टर सिाब बैठे तो रें पास िी खडा िो गया, यि ख्याल करते हुए शक इनके बाद िी रें खाऊँगा।

इन्ोंनें किा- "आयें, रेरे साथ भोजन करें।"

रें बोला- "रिोदय! रें तो आपके खा लेने का बाद िी खाऊँगा।"

डाक्टर कुपुपुस्वाशर्-"रेरे साथ भोजन करने की बात से आप िैरान क्यों ंिो गये ? सर्स्त जीवों ंके शलए भोजन की रित्ता-उपयोशगता एक-सी निीं ंिै क्या? पेि भरने के शलए एक शनशश्चत रात्रा रें िी तो सब भोजन करते िैं। भले िी िरीर को कपडों ंसे ढक कर बािरी विभूषा से डीलडौल बडा शदखायी देने लगे तो क्या हुआ? िैं तो सब जीव एक सरान िी। ईश्वर िारा सर् भाव से ित्येक जीव के शलए भोजन अनुबप्तन्धत िै; शनशश्चत शकया हुआ िै। ऐसी प्तस्थशत रें सम्भव निीं ंशक कोई दूसरे का भाग खा सकता िो। अतिः छोिे-बडे का, शकसी िकार का अन्तर न रखते हुए आप आयें और पास बैठ कर रेरे साथ िी भोजन करें।"

इस पर रें गम्भीरतापूवमक शवचार करने लगा-"ये तो उच्च-रिान् वेदाप्तन्तक शसद्धान्तों ंकी, दािमशनकों ंजैसी बातें करते िैं; अवश्य िी अब इनके व्याविाररक शियाकलापों ंपर सूक्ष्म दृशष्ट रख, इनकी रिानता पर ध्यान देना िोगा।" ऐसा सोच कर उनका आदेि ऱानते हुए भोजन के शलए रें इनके पास िी बैठ गया। री और दिी के पात्रों ं को एक ओर रख कर बीच रें सब भोजन-साग्री रख ली गयी। री के बतमन से ठीक आधी रात्रा री रेरी थाली रें डाल शदया शजससे खि करना भी रुप्तिल लगा। दिी बहुत गाढ़ा था । छुरी से शनकालना पडा । दिी का भी आधा भग रेरी थाली रें परोस शदया । भोजन के सर्य जैसे इन्िोंनें कोई शभन्नता या भेदभाव निीं ंशदखाया, उसीकार त्येक शिया-कलाप रें, कायम-वयविार रें भी भेदभाव रशित िो कर रेरे साथ सदा िेर्पूवमक सरानता का िी वयविार करते रिे।

अध्याय २
डाक्टर रिोदय की सहृदयता

इस िकार कुछ सर्य व्यतीत हुआ। डाक्टर सिाब िशतशदन िातिः चार बजे के लगभग उठ जाते, रें भी इनके साथ िी जग जाता। िीषामसन इत्याशद योगासनों ंका ये अभ्यास करते और साथ-साथ िशिक्षण देते हुए रुझे भी अभ्यास कराते। इसके पश्चात् स्नान आशद िातिःकालीन शनत्य-करों रें इनका कुछ सर्य बीत जाता। शफर पूजा तथा धर्म-ग्रन्ों ंके स्वाध्याय के बाद िी वे एक कप कॉफी पीते थे।

शजस र रें डाक्टर सिाब रिते थे, वि बहुत बडा था शजसका अगला भाग कायामलय तथा शपछला भाग शनवास के शलए ियोग रें लाया जाता था। ये ऊपरी रंशजल रें रिते थे। शदन रें पाश्चात्य विभूषा रें रिते; परनुतु रात को तो ये भारतीय वस्त्र िी धारण करते थे। एक शदन रैं इनके पास ऊपर गया। करे की दीवार पर बहुत सारे शचत्र लगे हुए थे। बहुत से तो देवी-देवताओं ंके थे और कुछ शभि-शभि भाव-रुिाओं ंरें खीचें गये डाक्टर सिाब के

अपने फिोो थे, शजनको र्ैं एकिक देखता िी रि गया। डाक्टर सिाब पीछे खडे रुझे देख रि थे। एक सुहृद की भााँशत िर्पूवमक उन्होंनें पूछा- "आपके भी िर् ऐसे फिोो बनवा सकते िैं क्या?" शंकंशचत् संकोच से र्ैंने स्वीकृशत दे दी।

सायं ४ बजे के लगभग डाक्टर सिाब एक बंडल शलये र्ेरे पास आये और तैयार िो जाने के शलए किा। र्ैंने पूछा- "किााँ जाना िै िर्ें?" उत्तर र्ें केवल इतना िी किा - "बस आप र्ेरे साथ चशलए।" इनके िाथ से बंडल ले कर साथ चल शदया। एक भवन की पिली रं्शजल पर िर् गये। वि स्थान एक सुसप्तित र्िल-सा लग रिा था। इन्होंनें बंडल खुलवाया; देखा तो उसर्ें पाश्चात्य पिोाक थी। रुझे विी कपडे पिनने के शलए बोला। तब र्ैं सझ पाया शक िर् तो फिोो सूटूशडयो र्ें खडे िैं। हुआ यि शक फिोो प्तखंचवाने की र्ेरी इच्छा जान कर इन्होंनें पिले सूटूशडयो र्ें आ कर िबन्ध शकया; शफर र जा कर अपने कपडों ंका बंडल ले कर रुझे सूटूशडयो र्ें लाये और फिोो प्तखंचवाने के शलए तैयार िोने को किा। अलग-अलग रिुाओं ंर्ें र्ेरे तीन फिोो खीचं शलये गये।

उस सर्य डाक्टर सिाब पैंतीस वषीय थे और र्ेरी उर्र २२ वषम थी; शफर भी उनकी डेरस रुझे एकदर् शफि आयी। फिोो प्तखंचवाने के बाद िर् र लिौ। अगले शदन िार् को तीन रिुाओं ंकी तीन-तीन फिोो तथा इनके नैगेशिव शलये हुए र्ेरे पास आये। रुझे फिोो पकडाते हुए डाक्टर सिाब अशत िसि थे।

ाक्टिर साहब की सहृदयता का एक और उदाहरि-इनकी अलर्ारी र्ें शवशवध भाषाओं ंकी अनेक पुस्तकें रखी हुई थीं।ं कुछ पुस्तकें इन्होंनें रुझे पढने के शलए दीं।ं सभी पुस्तकों ंपर इनके नार् 'पी. वी. कुपुपुस्वाशर्' की र्िुर लगी हुई थी। र्ैंने पूछ शलया-"यि नार् आपने िाथ से शलखा िै या र्िुांशकत िै?" तुरन्त िी बोले- “आप भी ऐसा िी चािते िैं क्या?" र्ैंने शनिःसंकोच 'जी िााँ' कि शदया। वे शीघ्र िी पेपर और पैन ले कर आये और किा- "कृपया इंप्ति र्ें इस पर अपना नार् शलखें।" नरशसंिअय्यर अपना नार् शलख कर पेपर इन्हें थर्ा शदया। स्तिाक्षर वाला पेपर शसंगापुर भेज शदया गया। िस्ताक्षर-अंशकत र्िुर शसंगापुर से एक सप्तिा र्ें िी िर्ें िाप्त िो गयी। स्यािी तथा स्यािी का पैड भी साथ िी थे। सब-कुछ देते हुए डाक्टर सिाब ने रुझसे पूछा - "देख लें, सब चीजें ठीक आ गर्ी?" कृतज्ञतापूवमक खिुु िो कर र्ैंने 'जी िााँ' कि शदया। र्ैंने अनुभव शकया शक र्ेरे अपने र्ाता-शपता र्ेरी भावनाओं ंका िायद इतना ख्याल नििं ंरखते शजतना **करुिाशील सहृदय** िा**क्टर साहब ने मेरी सब इच्छाओं ंको सम्मान देते हुए अडवलम्ब पूित डकया।**

अध्याय ३
आध्याप्तिक शनदिन

डाक्टर सिाब ने अपनी लाइबे्ररी र्ें से जो आध्याप्तिक पुस्तकें र्ुझे दी थीं,ं उन्ें पढ़ने और शचन्तन-र्नन करने के पश्चात् र्ेरी शवचारधारा िी बदल गयी; गम्भीर शवरप्ति छा गयी थी। सांसाररक वसुतुओं ंर्ें अरुशच िोने लगी
थी। इस िापंशचक जगत् से बच शनकलने का र्ैंने दृढ़ शनश्चय कर शलया। र्ेरे शवचारों ंर्ें तेजी से पररवतमन आने पर,
र्न को पशवत्र िोते देख डाक्टर सिाब खुि थे। इस तरि कुछ र्िीने तो उदासीनता र्ें िी व्यतीत हुए। िेव बनाना, कपडे धोना इत्याशद सब कायम स्वतिः छूिते गये। शसर पर तेल न लगाने से बाल रूखे िो कर उलझ गये थे।
अपना अशधक सर्य एकान्त और र्ौन र्ें िी बीतने लगा।
जब कभी अत्याधुशनक अिकारी फिैनेबल व्यप्ति नजर र्ें आ जाते तो अपने र्न र्ें सोचता -
"शवलाशसतापूणम बहुर्ूल्य वस्त्र-आभूषणों ंसे सप्तित इस नश्वर देि को ढोये इधर-उधर क्यों ंभिक रिे िो ? केवल बािरी स्वच्छता-सजाविि की िी शचन्ता करते हुए लक्ष्यिीन र्ूर्ते रिते िो, परन्तु अपनी आन्तररक स्वच्छता-
िुशचता का ख्याल शबलकुल निीं ंकरते। तुर् लोगों ंकी दिा तो उस व्यप्ति जैसी िोचनीय िै, शजसके िाथ र्ें
र्न्न के पश्चात् तैयार र्क्खन रखा हुआ िै, शफर भी वि र्ी की खोज र्ें भिकता िै। अथवा तुम्हारी प्तस्थशत उस गडररए के सर्ान िै जो अपनी भेड को कन्धे पर लादे हुए िै; शकनुतु उसे शगरा हुआ सर्झ कर उसे कुएँ र्ें ढूाँढ़ता
िै। अरे र्ूढ़ र्ानव! तुम्हारे पास तो आिज्ञान का पशवत्र जल िै, शजससे अन्तर का अज्ञान-रूपी र्ल साफ शकया जा सकता िै। शनरन्तर िवाशित इन िाश्वत जल–पात से लाभ उठाने र्ें असर्थम िो कर अपने बहुर्ूल्य जीवन को व्यथम क्यों ंगाँवा रिे िो ? इस भााँशत तुर् चलते-शफरते िव र्ात्र िी निीं ंिो क्या?" ऐसा शवचार करते हुए उन्ें शतरसृकृत भाव से देखता।

डाक्टर सिाब ने र्ेरी र्नोदिा को भााँप शलया था। परन्तु कारण इन्ें कुछ पता निीं ंलग पाया था। र्ैं अस्वाभाशवक शवशक्षप्तता से ग्रस्त िोता जा रिा हाँ, इतना तो ये भलीभााँशत जान गये।

एक शदन की बात ि ै, दोपिर को िर्ने भोजन शकया, जो बहुत स्वाशदष्ट था। डाक्टर सिाब का स्वभाव था, अपने शर्त्रों ंके साथ बहुधा बााँि कर खाने रे्, शर्ल कर खाने रे् आनन्द लेते थे। इनके एक परर् शर्त्र सुब्रह्मशण अय्यर र से आधे र्ील की दूरी पर िी रिते थे। आज का कुछ भोजन इनके र जा कर दे आने का डाक्टर सिाब ने रु्झे अनुरोध शकया। न तो कभी पिले उनको र्ैंने देखा था, न िी उनका र जानता था। डाक्टर सिाब को इस बात का पता था। इसीशलए रु्झे इनके र का रास्ता अच्छी तरि सर्झा शदया और शर्त्र को फोन िारा रे्रे आने की सूचना भी दे दी।

र्ैं शर्त्र के र की ओर चल पडा। परन्तु िालत तो रे्री सार्ान्य न थी। िरीर पर कशि रे् शलपिे एक छोिे वस्त्र के अशतररि ओर कोई कपडा न था; क्योंशक शपछले कुछ शदनों ंसे अपने कीर्ती वस्त्राभूषणों ंका त्याग कर शदया था। चैत्र र्ास की तपती दोपिर, बारि बजे का सर्य था। पैरों ंरे् चप्पल पिनी निीं ंथी, नंगे पााँव तारकोल की उस सडक पर चलना िुरू कर शदया।

सडक पर चलते हुए र्ैं अपनी धुन रे् सोचने लगा-तन पर र्ात्र एक छोिा-सा कपडा लपिे र्ैं इनके र जा रिा हाँ। पिले कभी इनसे शर्ला भी निीं।ं र्ान लो, गलती से र्ैं शकसी दूसरे र रे् पहुाँच गया, जिााँ युवा पीढ़ी के लडके-लडशकयााँ रिते िों ंऔर रु्झे 'शभखारी' कि कर र्जाक करने लगे तो...? तभी रु्झे एक र्िान् रिस्यवादी सन्त पशट्टनत्तार के जीवन की एक र्िना याद आ गयी। एक बार वि केवल कोपीन पिने शभक्षािन के शलए, शनकले, तो एक दुष्ट ने उन्ें ढोंगी किते हुए दोषारोपण शकया और उनको कोडे लगाने लगा। तब तक पीिता चला गया जब तक वि थिबी निीं ंिो गये थे। उन र्िान् सन्त ने सब आर्ात चुपचाप सिन शकये तथा उदर-पूशतम को िी इसका कारण र्ानते हुए यि ठान शलया-

> अगर शकसी ने स्वयं आ कर रु्झे भोजन शदया,
> तो करूाँगा उसे स्वीकार;
> निीं ंजाऊाँगा भोजन िेतु बािर।
> शकसी ने चािे िर् भाव से शकया आर्न्त्रत,
> तब भी निीं ंजाऊाँगा भोजन र्ााँगने बािर।
> िे भगवान्!
> रे्रा िरीर भले िी र्ूशछमत िोने लगे,
> तब भी निीं ंजाऊाँगा उदर-पूशतम िेतु बािर।

भोजन एवं वस्त्रों ंके शलए किीं ंभी न जाने का प्रण ले कर पशट्टनत्तार ने एक पेड के नीचे आसन लगा शलया। सोचा करते-"क्या ये सब इस नश्वर िरीर के पालन-पोषण िेतु निीं ंकर रिा हाँ। तो ठीक! अगर र्ैं दोषी हाँ तो से्वच्छापूवमक खुिी-खुिी सब सिन करूाँगा।"

इस प्रकार इनके शवषय रे् सोचते-सोचते उन शवचारों ंरे् खोया हुआ था शक अचानक शकसी का स्वर सुनायी शदया जो रु्झे पुकार रिे थे; वि थे श्री सुब्रह्मशण अय्यर। डाक्टर सिाब िारा भेजे गये भोजन-व्यंजन उन्ें दे शदये। स्वीकार करते हुए उन्ोंनें बतलाया- "डाक्टर सिाब के फोन से खबर शर्लने पर प्तखडकी रे् खडे बािर की ओर देखता रिा; अनुर्ान लगाते हुए र्ैं खुद िी अब आपके पास आ गया।"

कुछ सर्य इसी तरि शवरप्ति रे् व्यतीत िोता चला गया। योग-सम्बन्धी कुछ पुस्तकों ंका र्ैंने अध्ययन शकया था। 'राजयोग' का शिक्षण प्राप्त करने का रे्रा इरादा था। र्ैं स्वाध्याय करता और शफर एक पेपर पर र्ुख्य शवषय-शबन्दु शलख लेता।

आशफस बन्द िोने के बाद डाक्टर सिाब रोज िार् को चार बजे एक कप चाय पी कर सायं भ्रर्ण के शलए चल देते। जैसे िी ये बिार शनकलते र्ैं अन्दर से दरवाजा बन्द कर अपनी आध्याप्तिक एकाप्तन्तक साधना र्ें लग जाता। अन्दर से कुण्डी बन्द करने की आवाज सुन कर िी ये आगे बढ़ते। शनत्यिशत का यि अभ्यास था। एक शदन ऐसा हुआ शक दरवाजा तो बन्द कर शदया, पर कुण्डी लगाना र्ैं भूल गया; ऐसा िोते देख कर डाक्टर सिाब तुरन्त दरवाजा खोल कर र्ेरे कर्रे र्ें िशवष्ट हुए। र्ुझे एकान्त र्ें बैठे हुए देखा और सार्ने रखे उस पेपर की ओर देख कर आश्चयमचशकत हुए शक 'राजयोग' शवषय पर र्ेरी अच्छी जानकारी िै। उन्िोंने किा- "शपछले काफी शदनों ंसे
आप पर र्ेरी दृशष्ट थी। आज र्ुझे आपकी व्यस्तता का कारण सर्झ र्ें आ गया। आपके व्यप्तित्व र्ें हुए पररवतमन का कारण जानने के शलए र्ैं कर्रे र्ें दौडा चला आया; अच्छा िी हुआ जो दरवाजा अन्दर से बन्द न था।"
ऐसा उशचत अवसर पा कर डाक्टर सिाब ने शवशभि कथा, दृष्टान्त, उपाख्यान, किानी इत्याशद के र्ाध्यर् से र्ुझे ऐसे अनेक आध्याप्तिक शनदेि शदये, जो हृदयस्पिी थे और शजन्िोंने उदासीनता-युि र्ानशसक प्तस्थशत को पररवशतमत कर र्ेरे अन्तस को छू शलया था। इनके अगाध िेर्भाव को र्ैं िब्दों र्ें व्यि निीं ंकर सकता। इनके िब्दों र्ें गिरा िभाव था। सर्झाने की िैली अत्यन्त िीप्तिद एवं कल्याणिद थी। हृदय को शपर्लाने वाली उस िैली ने पाषाणवत् र्ेरे कठोर शचत्त को िशवत कर शदया। इनके इसी शवशिष्ट गुण के कारण िी सबके र्न र्ें इनके िशत अद्भुत आकषमण था। र्ुझे ठीक सर्य पर उशचत र्ागम-दिमन देना िी अपना र्ुख्य कतमव्य सर्झते हुए उस िार् को इन्िोंने सैर पर जाने का शवचार िी छोड शदया। इनके अर्ूतर्य वचन अन्तरतर् की गिराइयों र्ें ऐसे िवेि कर गये जैसे केले के कठोर पेड र्ें शबना शकसी शविेष ियास के कोई कील सिज िी र्ुसा दी जाये। शजस िकार सकमस–बन्धक जीव-जन्तुओं ंको चाबुक से सिज िी शनयप्तन्त्रत कर लेता िै, साँपेरा अपनी बीन बजा कर साँप को नचाता िै; जादूगर एक छडी के जादू से दिमकों ंको र्ोशित कर लेता िै; ठीक उसी िकार र्ैं तो डाक्टर सिाब के स्नेिशसि, िेरणादायी शिक्षािद वचनों ंसे सम्मोशित िो गया। इन र्िान् सन्त के िेरक व्यप्तित्व ने करुणा और सिानुभूशत से र्ुझे यथाथम परर् सत्य से पररशचत कराया। र्ेरा र्न शपर्ल गया और कुछ िी शदनों र्ें अपनी सिज स्वाभाशवक दिा र्ें लौ आया। र्ुझे सार्ान्य प्तस्थशत र्ें आया देख कर डाक्टर र्िोदय अत्यन्त िसि हुए।

कुछ सर्योपरान्त र्ैंने अपनी अशभलाषा व्यि करते हुए डाक्टर सिाब से किा- "तपस्या िेतु शिर्ालय-शदिा की ओर िस्थान के शलए आपकी कृपापूणम अनुर्शत चािता हाँ। विाँ पर सन्त-र्िािाओं,ं ऋशष-र्ुशनयों ंएवं योशगयों ंकी सेवा-पूजा िारा अपना जीवन साथमक और सफल बनाना चािता हाँ।"

र्ेरी अपररपक्व प्तस्थशत की बातें सुन कर र्ुस्कराते हुए ये बोले- "इसके शलए अभी उशचत सर्य निीं ं आया। ऐसा र्ाना जाता िै शक कठोर तपस्या से अपने िरीर को यन्त्रणा दे कर पीशडत करने की कोई आवश्यकता निीं।ं ित्येक र्िा शवशध के शवधानानुसार ठीक अवसर पाते िी स्वयं शिंत िो जाती िै। बिार से कठोर नाररयल सर्ुशचत सर्य पर पक कर अन्दर से र्धुर जलपूणम िो जाता िै। आप अभी कुछ सर्य गृिस्थ आश्रर् र्ें रि कर अनन्य शनिापूवमक साप्तत्त्वक जीवन-यापन करें। पररपक्व अवस्था र्ें पहुँचने पर आपकी यि र्नोकार्ना स्वतिः पररपूणम िो जायेगी। यि तो शनशवमवाद सत्य िै शक र्ानव-र्न की सच्ची एवं दृढ़ अशभलाषा एक न एक शदन अवश्यर्ेव पूणम िोती िै।"

र्ेरे र्न की दुशवधापूणम शवचशलत दिा को देख कर ये र्ुझे उस शदन अपने साथ सैर पर ले गये। उस सर्य जोिौरबिारू के सर्ुि पर पुल बनाया जा रिा था; जिाँ िजारों ंकी संख्या र्ें र्जदूर कायम र्ें जुिे हुए थे। डाक्टर र्िोदय र्ुझे कई अन्य स्थानों ंपर भी ले गये। बन्दरगाि के पास इन्िोंने र्ुझे शदखाया शक जिाज से र्ाल उतार कर लोकल िरक र्ें भर कर अन्य िरों र्ें कैसे पहुँचाया जाता िै?

ये बहुधा रुझे फुिबाल-खेल-रै्दान रें् भी ले जाते थे। िर् दोनों ंखेल देखा करते। कभी-कभी सरुि-ति पर बैठ जाते और रुझे रित्त्वपूणम बहुरूल्य आध्याप्तिक उपदिे-शनदिे शदया करते-"इतना ध्यान रि शक संसार रें् रिते हुए र्ाया के िभाव से बचने के शलए शनरन्तर िियास करते रिना अत्यावश्यक िै।"

अध्याय ४
अनूठी उदारता

शसंगापुर से िकाशित पशत्रका 'द र्लाया शिरबूयून' (The Malaya Tribune) के िधान सम्पादक की डाक्टर कुपुपुस्वाशर् से शर्त्रता थी। उन्िोंने अपनी इस पशत्रका के शलए डाक्टर शि्दय को अपने लेख भेजने का आग्रि शकया ताशक पाठक उनसे लाभाप्तित िो सकें। इनके बहुत से लेख इस रैगजीन रें् िकाशित हुए। रे्शडकल साईंस रें् ररसचम वकम के कारण इंण्डि से डाक्टर शि्दय को अनेक उपाशधयााँ, िसापत्र, पुरस्कार एवं साशिमशफके इत्याशद िाप्त हुए थे। शसंगापुर तथा कौलालमु्पुर रें् धर्ामनुरोशदत जीवन-यापन करते हुए भव्य व्यप्तित्व से शवभूशषत, सवमगुणसम्पि डाक्टर सिाब अपने हृदय की उनुमिता, उदारता आशद शवशिष्टताओं ंके शलए सुशवख्यात

थे। इसी कारण इन्होंने 'डाक्टर धर्मभूषण : कुपुपुस्वाशर् अय्यर' की से्नि-सम्मान-सूचक उपाशध अशजमत की। ितेयेक व्यप्ति इनके हृदय की शविालता एवं दानिीलता से पररशचत था।

संसार रें रिते हुए एक सचे्चे वीर सैशनक की भााँशत इन्होंने भौशतकता पर पूणम रूप से शवजय िाप्त कर ली थी। ये पूणमरूपेण शनशलमप्तता, तिस्थता एवं शनरासप्ति का जीवन-यापन करते थे। इसी अनासप्ति ने उनरें उदात्त ज्ञानी भि की प्तस्थशत िाप्त िोने का बीजारोपण शकया। लोग तो पिले से िी इन्हें एक त्यागी-वैरागी गृिस्थ पुकारने लगे थे। िथर्ातः इनरें बाह्य शवरप्ति का बीज पडा, अंकुररत बीज पौधे के रूप रें पल्लशवत हुआ, शफर वृक्ष-रूप रें बढ़ने लगा शजसरें ज्ञान के अरृत-रस-पूणम फल पैदा हुए। ज्ञान-रूपी फल रें इनकी आध्याप्तिक कुषुधा शरि कर पररतृप्त करने की पूणम क्षर्ता थी। शबना आन्तररक शवरप्ति के बाह्य शवरप्ति या संन्यास पूणम वैराग्य-संन्यास निीं ं किलाता। आन्तररक वैराग्य अत्यन्त िीर्प्तिदायक, क्षर्तापूणम एवं िभावी िोता िै। डाक्टर रिोदय ने तो आन्तररक शवरप्ति और त्याग के दृढ़-अिल शनयरों ंका शवशधवत् पालन शकया था।

रिारे डाक्टर रिोदय 'अिदान वल्लल' किलाते थे, शजसका अिोय िै-उदार अिदाता। कोई भी, शकसी भी सर्य शजस िकार की सिायता के शलए इनके पास आया, ये पूरे शदल से यथासम्भव सिायता के शलए तत्पर रिते। िर् िायिः रिाभारत के सुिशसद्ध पात्र कणम की दानिीलता की चचाम करते िैं; जब शक उसने सदैव भौशतक वसुतुओं ंका िी दान शदया, कभी शकसी भूखे की कुषुधापूशतम िेतु भोजन निीं ंप्तखलाया था।

ऐसा किा जाता िै शक एक बार कणम अपने रिल की बालकनी रें ििल रिे थे। उसी सर्य उस ओर एक शनधमन, भूखा व्यप्ति भोजन की शभक्षा राँगने आया, परनु्तु कणम ने उसे भोजन न दे कर पास के 'अिकेषेत्र' की ओर जाने के शलए अंाँगुली से इिारा कर शदया था। वि व्यप्ति विााँ गया, भोजन िाप्त कर उसने अपनी भूख शरिायी। रिाभारत के युद्ध रें जब कणम र्रणासन्न अवस्था रें था तो श्रीकृष्ण से उसने अपनी प्यास बुझाने के शलए पानी की राँग की। श्रीकृष्ण ने कणम को अपने िाथों ंको िुँि तक लाने के शलए किा; िुँि के पास अंजुली बनाने के किा। कणम अपना दायााँ िाथ िुँि तक ले गया। श्रीकृष्ण ने जैसे िी िाथ पर पानी डाला तो पानी स्वणम रें पररवशतमत िो गया। अतृप्त कणम िताि िो कर व्यग्र िो उठा। असन्तोष िकि करते हुए कणम ने श्रीकृष्ण से किा- 'िे कृष्ण! जल तो स्वणम बन गया, रेरी प्यास तो बुझी निीं,ं रैं तो प्यासा िी रि गया।"

श्रीकृष्ण ने उत्तर शदया- "जीवन-भर तुर् स्वणम का दान करते रिे; परनु्तु भोजन का दान कभी निीं ंशदया। भूखे को कभी भोजन निीं ंप्तखलाया, प्यासे को पानी निीं ंशपलाया, उसी का यि पररणार् िै। याद िै तुम्हें? एक बार भूख से तडपता एक याचक तुम्हारे पास भोजन के शलए आया, तो तुर्ने कुछ खाने की वसुतु न दे कर उाँगली से संकेत करते हुए शनकि के 'अिकेषेत्र' रें भोजन के शलए भेज शदया था। जैसे भी िै, अब तुर् अपनी इस अंाँगुली को चूस कर अपनी प्यास बुझा सकते िो।"

इसी रौके पर कणम ने रोषणा कर दी - "सब िकार के दान रें अिदान सवमश्रेिे दान िै। अथामत् भूखे को भोजन कराना िी सवोत्तर् दान िै।"

कुन्ती के ज्येिे पुत्र धर्मराज युशधशिर ने सदैव शनधमनों ंको भोजन शदया। परनु्तु िरारे डाक्टर कुपुपुस्वाशर् तो सब िकार से, तन-र्न-धन से दूसरों ंके सिायताथम सदैव कशिबद्ध रिे। इनकी परोपकाररता, हृदय की उदारता तो अनोखी िी िै।

एक शदन की बात िै, जैसे िी िर् भोजन के शलए बैठे, शक बािर से शकसी शभखारी की भोजन-याचना की पुकार सुनायी दी-"बहुत भूखा हाँ, भोजन चाशिए।" डाक्टर रिोदय तत्काल बािर पहुाँचे और याचक से सम्मानपूवमक किा- "श्रीर्न्! जल्दी िी आपको भोजन कराता हाँ।" ऐसा किते िी ये रसोईर रें आये। कुल भोजन

का आधे से भी अशधक भाग एक थाली रे्ं पत्तल शबछा कर परोस शदया। चावलों ंपर र्ी डाल शदया। सप्तियााँ भी चिुर र्ात्रा रे्ं रखीं।ं बािर जा कर भोजन की थाली याचक के सार्ने रखी। सिानुभूशतपूवमक उसकी सिायताथम िु पास िी बैठ गये। भोजन करके वि बहुत खुि हुआ। ऐसे िेर्पूवमक परोसा हुआ ताजा-ताजा भोजन उसको पिले कभी किीं ंसे निीं ंशर्ला था। सन्तुष्ट िो िसितापूवमक उसने किा- “र्िोदय! रै्ं कई जगि शभक्षा र्ााँगने गया; परन्तु िेर्पूवमक परोसा गया ऐसा स्वाशदष्ट भोजन किीं ंभी िाप्त निीं ंहुआ।”

रप्तन्तदेव ने अि-जल का त्याग कर अडतालीस शदन तक व्रत-अनुिान शकया था। कठोर शनजमल उपवास के बाद जब वि भोजन करने बैठा िी था शक एक अशत शनधमन उसके दरवाजे पर शभक्षा र्ााँगने आ गया। शबना शकसी शिचक के तुरन्त िी अपना भोजन खुिी से शभकु्षक को दे शदया। रप्तन्तदेव ने अि जल पी कर िी कु्षधा-तृप्त करनी चािी, तभी एक प्यासा पानी की याचना करते विााँ पहुाँच गया। िसितापूवमक अपना पानी भी उसे दे शदया र्िारे डाक्टर र्िोदय रप्तन्तदेव की िी तरि अत्यन्त करुणािील एवं र्िान् दानी िैं।

उस कु्षधातम को स्वाशदष्ट भोजन प्तखलाने के पश्चात् िर् दोनों ंभोजन करने बैठे। बचे भोजन की र्ात्रा तो कर् िी थी। रै्ंने थोडा और खाना बनाने का शवचार शकया। अन्तर रे्ं उठे इस भाव को डाक्टर सािब ने भााँप शलया और बोले- "आप अि र्ात्रा रे्ं बचे भोजन पर शवप्तस्मत िो रिे िैं शक िर् क्या खायेंगे?" रै्ं चुप खडा रिा। अशत िसि िो वे रु्स्कराते हुए बोले- "उस जीवात्मा ने आनन्दपूवमक भरपेट भोजन शकया, पूणम तृप्तप्त की जो उसे अनुभूशत हुई, विी तुशष्ट िर् भी अनुभव कर रिे िैं। इससे अपयामप्त की तो भावना िी शर्ट् जाती िै। आओ खायें, रे्रे इतना िी भोजन पयामप्त िै।" िर् दोनों ंने अवशिष्ट भोजन का स्वाद और आनन्द शलया।

एक अन्य शदन, लगभग एक बजे िर्ने अपना भोजन सर्ाप्त शकया िी था शक दरवाजे पर एक वृद्ध व्यप्ति की पुकार सुनायी दी-"रै्ं भूखा हाँ।" बरार्दे के बािर आ कर देखा-अशत शनधमन एक तशर्ल व्यप्ति खडे थे। देने के शलए भोजन तो र्र रे्ं था निीं।ं दूसरों ंके सिायताथम सदैव जेब रे्ं खुले पैसे अथामत् कुछ शसके्क रखना डाक्टर सािब की आदत थी। भोजन की याचना सुनते िी तीव्र वेग से उसकी ओर दौडे। शवनम्रतापूवमक, याचक को भोजन िेतु जेब से पयामप्त धनराशि देते हुए धीरे् से किा-"श्रीर्ान् जी, आप वररि ितीत िोते िैं, िोटल रे्ं जा कर अच्छा भोजन िाप्त कर सकते िैं।" वि तो बहुत खुि हुआ और डाक्टर सािब को आिीवामद देते हुए चला गया।

एक सर्य एक गरीब धनिीन व्यप्ति डाक्टर सािब के र्र आया और किने लगा-"र्िोदय! रै्ंने सुना िै शक आप बडे दानिील िैं। रै्ं गरीब हाँ; रे्रे पास पैसा निीं।ं शजस रोग से रै्ं पीशडत हाँ, इसका इलाज बडा र्ाँिगा िै। शचशकत्सा रे्ं भारी व्यय उठाना पडेगा। कैसे भी आप रे्री सिायता कीशजए और इस कष्ट से रे्री रक्षा कीशजए। सुनते िी डाक्टर सािब उसे अन्दर ले गये। जााँच-परीक्षण शकया। रे्शडकल टेस्टों ंकी ररपोटम से ज्ञात हुआ शक वि गम्भीर रोग से पीशडत िै। शसंगापुर के सरकारी अस्पताल के सजमन को रोग के शवषय रे्ं सलाि-र्िवरे िेतु तुरन्त फोन शकया। वि सजमन िर्ारे डाक्टर सािब के शर्त्र थे। ित्युत्तर रे्ं उन्ोंने रोगी को तुरन्त शसंगापुर भेजने के शलए किा। डाक्टर सािब ने उसे (सफर) राि-खचम एवं भोजन इत्याशद दे कर अशवलम्ब शसंगापुर के शलए रवाना शकया।

यि जानते हुए शक रोगी को डाक्टर कुपु्पस्वाशर् ने भेजा िै, ईश्वर-अनुग्रि से वि ठीक िो जायेगा; सजमन द्वारा उसका ऑपरेिन कर शदया गया। रोग का पूणम शनदान िो जाने पर रोगी जोिौरबारु लौटा। डाक्टर सािब के चरणों ंरे्ं शगर पडा और कृतज्ञता व्यि करते हुए बोला - "आपने रु्झे बचा कर नव-जीवन शदया िै। भयंकर रोग से ठीक िो जाने की आिा शबलकुल न थी; आपकी कृपा से रै्ंने जीवन-लाभ िाप्त शकया िै। शसंगापुर के अस्पताल के स्टाफ-सदस्यों ंने बहुत देखभाल की। सजमन तथा दूसरे डाक्टर िशतशदन आते और रे्रा िाल पूछते। ऑपरेिन के अगले शदन सजमन ने रु्झसे किा - "आप बडे सौभाग्यिाली िैं जो डाक्टर धर्मभूषण कुपु्पस्वाशर् जी के र्र सिायता लेने पहुाँच गये। िर् उन्ें अपने गुरु-रूप रे्ं सर्ादृत करते िैं। इनके ित्येक परार्िम को सम्मानपूवमक

ऐसे र्ानते िैं जैसे इनका पशवत्र आदिे िो। आप भयंकर रोग से पीशडत थे। डाक्टर सिाब ने शचशकत्सा के शलए आपको िर्ारे पास भेजा। िर्ने िल्य-शचशकत्सा कर दी और िभु-कृपा से सफलतापूवमक आप स्वास्थ्य-लाभ भी िाप्ति कर रिे िो।" ये सब सुना और शफर डाक्टर सिाब ने पुनिः कुछ पैस दे कर उसको अपने गााँव शनवासस्थान वापस भेज शदया।

एक तशर्ल युवक सुब्रर्शनयर् जो अंाँगरेजी र्ें सुशिशक्षत िोते हुए भी किीं ंनौकरी न पा सका। शसंगापुर, कोलालमुपुर तथा अन्य कई स्थानों ंपर वि नौकरी की तलाि र्ें भिकता रिा था, पर असफल िो शनरािा–िताि िो लौता। अन्त र्ें जिोोरबिारू डाक्टर सिाब के र्र दर्द के शलए पहुाँच गया। उसकी दुिःखद गाथा सुन कर डाक्टर सिाब ने िीघ्र िी नौकरी शर्ल जाने का आश्वासन शदलाते हुए उसे अपने र्र ठिर जाने का आग्रि शकया। अपने कई पररशचत व्यप्तियों ंसे सम्पकम शकया। कुछ िी शदनों ंर्ें उसके शलए पयामप्त वेतन वाली सरुपयिु एक अच्छी नौकरी की व्यवस्था िो गयी। सर्ोपरान्त उसके शनवास िेतु आरार्दायक एक बशढ़या र्कान का िबन्ध िो गया। र्र की साज-सिा के शलए पयामप्त धन भी शदया। साथ िी यि किा शक पैसे की जरूरत पडने पर शनिःसंकोच इनके पास आ जाया करे। **डाक्टर साहब की कारुशडकता, दानशीलता और उदारता असीम थी, असाधारि थी, अनूठी थी।**

अध्याय ५
िजूि भगवद्भप्ति

लेंशिया र्ें बहुत से र्तन्दर थे, जिाँ तशर्ल लोग पूजा शकया करते थे। डाक्टर सिाब के र के पास एक र्तन्दर था, शजसर्ें वाशषमकोत्सव र्नाया जा रिा था। राशत्र का सर्य था; भगवान् की िोभा-यात्रा डाक्टर सिाब के
र के पास से िी गुजरी। िोभा-यात्रा जब र के शनकि पहुँची तो उन्िोंने भगवान् का शविेष पूजन शकया।
सुगतन्धत पुष्पों ंसे शृंगार शकया, नैवेद्य अपमण कर कपूमर से आरती उतारी; तत्पश्चात् िचुर र्ात्रा र्ें सबको खुले शदल
से िसाद शवतररत शकया। डाक्टर सिाब की शवस्मयकारी अपूवम भप्ति सबको स्पष्टतः शवशदत िो गयी। धर्म-जाशत
के भेदभाव से परे ये सभी को सर्ान भाव से िेर् करते थे। सर् भाव की शविेषता के कारण िी सब इनसे िाशदमक
िेर् करते थे। इनके शवचार से भगवद्पूजा-अचमना अत्यावश्यक धाशर्मक कृत्य िै। उस शदन धाशर्मक भावना से पररचय
कराते हुए इन्िोंने बताया :

"यिाँ से स्वदेि जाने का खचाम बचा कर िर्ें उस पूँजी को िसितापूवमक भगवत्सेवा र्ें लगा देना चाशिए। अनाथ-रक्षक परर्ात्मा की कृपा-िाप्ति िी र्ानव की एकर्ात्र अशभलाषा िोनी चाशिए। यिी सवमश्रेष्ठ शनशध िै।

भगवान् तो सबसे िेर् करते िैं। भगवद्स्मरण र्ें लगे रि कर र्ानव उनकी कृपा िेतु सदैव िाथमना करता
रिे। धर्मग्रन्थों ंका भी यिी आदेि-उपदेि िै शक **भगवन्नाम सदा-सवतदा अखण्ड रूप से जपते रहना चाडहए।**
मानव-जीवन का एकमात्र लक्ष्य भगवद्भक्ति ही होना चाडहए। िास्त्रों ंर्ें इसके िर्ाण शर्लते िैं और यि
अनुभवशसद्ध भी िै। यिी कारण िै शक र्ाता-शपता अपनी सन्तान का नार्करण भगवान् के नार्ों ंपर करते थे।
बालकों ंको रार्, कृष्ण, गोपाल, शिव, र्ुरुगन, िंकरन इत्याशद तथा बाशलकाओं ंको लक्ष्मी, सरस्वती, पावमती,
र्ीनाक्षी, सीता, कार्ाक्षी इत्याशद नार्ों ंसे पुकारा जाता था। परन्तु वतमर्ान सर्य र्ें देखते िैं शक बच्चों ंको अथमिीन
संशक्षप्त नार् से बुलाते िैं। लडकों ंको गोपू, शकचूचू, रार्ू, िंगु और लडशकयों ंको यच्ची, चचूचू, र्ीनू, कार्ू आशद।
ब्दों ंको बदले शबना िभु का नार् ठीक-ठीक पुकारना अत्यशधक लाभकारी िोता िै। भगविार् उपयुि रीशत से
जपना चाशिए। नार् को छोिा करके जपना अपराध र्ाना जाता िै। नार् तो र्न्त्र के सर्ान िोता िै, शजसका
उच्चारण उशचत रीशत से करना अपेशक्षत िै। अिुद्ध, त्रुशिपूणम उच्चारण से र्न्त्र-िप्ति लुप्त िो जाती िै। र्न्त्र
भिाविीन िो जाता िै, उसका कोई फल निीं ंिोता। पशवत्र ग्रन्थ श्रीर्द्भागवत के छठे स्कन्ध के िथर् अध्याय र्ें
अजाशर्ल का उपाख्यान वशणमत िै, जो सवम िशसद्ध िै :

अजाशर्ल ब्राह्मण पररवार का एक धाशर्मक व्यप्ति था जो बाद र्ें िराब, जुआ, वेश्यागर्न जैसे अनेक
दुगुमणों ंर्ें फँस कर दुराचारी िो गया था। वि दि बच्चों ंका शपता था। उसके सबसे छोिे पुत्र का नार् 'नारायण'
था। िाणान्त के सर्य यर्दूत उसको लेने आये। अजाशर्ल जोर से शचल्ला कर अपने बेिे को पुकारने लगा-
"नारायण", "नारायण!" यर्दूत उसके र्ुख से भगवान् का नार् सुन कर चौंक गये। उधर वैकुण्ठ लोक से
'नारायण' नार् सुनते िी शवष्णुदूत दौडे आये। दोनों ंतरफ के दूतों ंके बीच वाद-शववाद िुरू हुआ। वैकुण्ठ-दूतों ंने
किा- "अजाशर्ल भगवद्भि िै। जीवन के िारतम्भक शदनों ंर्ें िास्त्रोि शवशध से अपने दैशनक शनत्य कर्म-अनुष्ठान
सम्पि शकया करता था।" यर्दूतों ंने किा- "अब तो यि दुराचारी िो गया िै। सब िकार के दुष्कर्ों र्ें लगा हुआ
िै।"

वैकुण्ठ से आये दूतों ंने र्ोशषत शकया-"नारायण नार् उच्चारण करने से अब वि शनष्पापी िो गया िै, अब उसके पुराने सभी पाप धुल गये िैं।" यर्दूत तो वि स्थान छोड कर चले गये। अजाशर्ल की जब आँखें खुती तो उसे लगा जैसे वि गिरी नीदं से जगा िो। उसने पूछा- "भयानक आकृशत वाले यर्दूत किाँ िैं?" उसे उत्तर शर्ला- "वे सब शवष्णुदूतों ंिारा खदेड शदये गये।" ऐसा सुनते िी उसका हृदय िभुन्ि-र् से आप्लाशवत िो गया। अपने कुकर्ों पर उसे बहुत पश्चात्ताप हुआ और भगवान् का र्िान् भि िो गया। अन्त र्ें भगवान् ने उसे र्ोक्ष िदान शकया।

एक र्िान् तशर्ल र्िला सन्त अव्वइयार के कथनानुसार र्ततन्दरों ंर्ें जा कर ईश्वर की पूजा-अचमना करना वसुतुतिः उत्तर् कायम िै। आजकल तो लोग इसकी अविेलना कर रिे िैं। शकनुतु यि बात सोचने की िै शक िरीर स्वस्थ िोने पर र्ततन्दर र्ें दिमन और पूजा िेतु क्यों ंन जाया जाय ? अथामत् अवश्य जाना चाशिए। भगवान् िर्िा र्िरे दुष्कर्ों-अपराधों ंको क्षर्ा कर देते िैं। र्ानव से भी एक-दूसरे के िशत क्षर्िीलता का व्यविार अपेशक्षत िै। ऐसे बहुत से लोग िैं जो र्ततन्दर निीं ंजाते; उन्िीं ंको दिमन देने के शलए भगवान् िोभा-यात्रा के र्ाध्यर् से बािर पधारते िैं ताशक ये लोग भी र्निोिारी सुन्दर भगवशिग्रि के दिमन कर सकें। खेद का शवषय िै शक बहुत से लोग तो बािर पधारे भगवान् के िशत भी भप्तिभावना निीं ंरखते और दिमन-लाभ उठाने की इच्छा तक भी निीं ंरखते, कारण शक वे शववेकिून्य िो चुके िैं। वे लोग शथयेिर, शसनेर्ा, डांस इत्याशद भोग-शवलास र्ें शलप्त रिते िैं, क्योंशंक 'आधुशनकता' नार्क र्ाया-रूपी राक्षसी के जाल र्ें फैस गये िैं। िास्त्र-शवरोधी इन कृत्यों ंसे भगवद्भि अपने को बचाये रखते िैं। यथाथमतिः ऐसे सचे्चे भि जन िी र्ानवता को शवपशत्तयों ंसे बचाने र्ें सिायता करते िैं। सवमिप्तिर्ान् ईश्वर की सदा-सवमदा आराधना करते रिना िर्ारा िथर् कतमव्य िै। वास्तशवक ऐश्वयम यिी िै।"

डाक्टर सािब का उस शदन का यि विव्य आज भी र्ेरे कानों ंर्ें गूाँज रिा िै। जब र्ैं इनके साथ सायंकालीन भ्रर्ण के शलए जाता तो विाँ भी वे र्ुझे नयी-नयी अनोखी सीख शदया करते थे :-

"आज का मानव सोचने लगा है डक मानवीय बुक्तद्ध ही केवल मात्र सवतश्रेष्ठ है। वह यह डवचार नहीं ं करता डक इस बौक्तद्धक क्षमता के पीछे एक और महान् शक्ति है। अनन्त, अपररवततनशील, सवतव्यापी ब्रह्म की शक्ति की सवोच्चता के आगे भला मानवीय बुक्तद्ध शक्तिशाली कैसे हो सकती है? सवोपरर ब्रह्म-शक्ति की तुलना में तो मानवीय शक्ति अडत नगण्य है। बहुत से लोग इस शवषय पर तकम-शवतकम करते रिते िैं। परब्रह्म की सत्ता जो चौदि भुवनों ंकी संरचना करती िै, जो छोिे से बडे तक सर्स्त जीवों ंको, चौरासी लाख योशनयों ंके जीव-जनुतुओं ंको िप्ति िदान करती िै, वि र्ानवीय बुप्तद्ध की सीशर्त अिि िप्ति के आगे असीशर्त एवं अतुलनीय िै। इस अपररशर्त िप्ति के शबना तो जीवन सम्भव िी निीं।ं ईश्वर की िप्ति िी र्िान् िै।

चिण्ड अशग्न जैसे सब-कुछ स्विा कर देती िै; वैसे िी र्ानव की कार्-वासना उसका सब-कुछ नष्ट कर देती िै। कार्-वासना का उन्माद बडा भयाविि िै। र्ानव-र्न सनुतुशलत निीं ंरिता, शजसके पररणार्स्वरूप वि बन्धन, अज्ञान और शवपदाओं ंसे ग्रस्त िो जाता िै। ईश्वर र्ें अिल शवश्वास एवं दृढ़ शनिा िी इच्छा तथा कार्ना-वासना को शनरूमल कर सकती िै।

इप्तिय-संयर् के शबना व्यप्ति अिान्त र्न से यत्र-तत्र भिकता रिता िै। अिता-र्र्ता से ग्रस्त व्यप्ति भिु से िेर् निीं ंकर सकता। सूई की नोक से ऊाँ ि का शनकल जाना भले िी सम्भव िो जाये; परनुतु एक नाप्तस्तक स्वगम

र्ें िवेि कदाशप निीं ंपा सकता। र्िोसप्ति का त्याग करने वाले िी आि-स्वराज्य र्ें िशवष्ट िो सकते िैं।

शवपरीत शलंग के िशत वासना-लालसा व्यप्ति को भ्रशर्त कर देती ि; शकनुतु भगवद्कृपा से व्यप्ति अपना बचाव कर सकता ि। अनेक दुष्कर्ाँ, कुकृत्यों ेर् र्ानव अपना सर्य व्यथम गाँवाता ि, शफर िोध, कार्-वासना आशद कुकर्ों का शिकार िो जाता ि और पाप-पुण्य की कतई शचन्ता निीं ंकरता। तो भी पूवम जन्मों ंके ुभकर्ों- सुकृतों ंके कारण उसे कुछ बोध िोने लगता ि; शववेक जागृत िोने पर वि पश्चात्ताप करता ि तथा अपने कुकर्ों एवं अपराधों ंके शलए ईश्वर से क्षर्ा-याचना की िाथमना करता ि, शफर उसके हृदय र्ें भप्ति बढ़ने लगती ि, शजससे उसके शपछले पापों ंका क्षय िो जाता ि।

गोस्वार्ी तुलसीदास, भि शबल्वर्ंगल, अरुणशगरीनाथर इत्याशद सन्तों ंने िर्ारे सार्ने र्ोक्ष-पथ िस्त शकया ि। सरोवर र्ें भले िी अनेक पुष् प्तखले िों;ं परनुतु उसकी िोभा तो िफुप्तल्लत कर्ल से िी बढ़ती ि। आकाि र्ें तारा गण चर्कते िैं, सुन्दर लगते िैं, वसुतुतिः पूणम चन्द्र् से िी उसकी िोभा शिगुशणत िोती ि। **धन-सम्पडि, पररवार तथा अन्य लोकों ंकी आसक्ति छोडे डबना कोरी शास्त्र-डवद्विा का कोई अथत नहीं**,ं **कुछ उपयोग नहीं**।ं"

डाक्टर सािब अनेक तशर्ल सन्तों ंएवं दािमशनकों–ंपशट्टनथ्थार, तायुर्ानवर इत्याशद के अथमपूणम हृदयस्पिी भजन गाया करते थे।

एक बार डाक्टर सािब ने बताया- "यि संसार अच्छाई-बुराई, गुण-अवगुण, पूणमता-अपूणमता का शर्श्रण ि। अगर व्यप्ति अपना ध्यान शकसी की बुराइयों,ं कशर्यों,ं अवगुणों ंपर िी केप्तित कर ले तो शफर दूसरों ंकी अच्छाइयों ंऔर गुणों ंको तो कभी देख िी निीं ंपाता और इस तरि वि

अपनी िाप्तन्त खो बैठता ि। अच्छाई-बुराई को भली िकार सावधानीपूवमक परखना िोगा; तब किीं ंवि बुराई से बचाव करेगा तथा अच्छाई की ओर िेररत िोगा।

र्न की क्षर्ता सीशर्त ि। अगर इसे भला िी भला देखने र्ें िशिशक्षत शकया जाये तो सबके गुणों ंपर िी ध्यान देगा, शफर दूसरों ंकी बुराई, अवगुण और कशर्याँ नजर िी निीं ंआ सकतीं।ं शवपरीत अवस्था र्ें बुराई, अवगुण देखने की किीं ंिेरशनंग दे दी गयी तो शफर वि भलाई-अच्छाई देख िी निीं ंसकता, वि भलाई और बुराई एक-साथ निीं ंदेख सकता।

वतमर्ान जगत् र्ें र्ूणा–िष एवं र्िासप्ति शदन ब शदन बढ़ रिी ि, जो यथाथमता को शछपा देती ि। िथर्तिः र्ानव-र्न र्ें स्वत्व पाने की चाि िोती ि-र्ान लें कोई फल िो या स्त्री िो। इस उद्देश्य की पूशतम के शलए वि ियास करता ि, इच्छा-पूशतम न िोने पर झुंझलािा और शनरािा िी िाथ लगती ि। और िाप्तप्त िो जाये तो वि खुि िो जाता ि। अपने को सुखी अनुभव करता ि। जब शक यि सुख और िसिता वसुतु के उपभोग करने तक िी सीशर्त ि। भोग की सर्ाप्तप्त िो जाने पर उसर्ें कुछ आकषमण निीं ंरिता। अतएव इस भौशतक जगत् का सुख क्षशणक ि, अस्थायी ि; जब शक आिबोध, आिज्ञान का आनन्द शनत्य और स्थायी ि। इसे पा लेने पर पररपूणम स्थायी परर् आनन्द की िाप्तप्त िोती ि। स्थायी सुख शकसी वसुतु या व्यप्ति र्ें निीं,ं अशपतु आिबोध र्ें ि। लौशकक सुख–ाप्तप्त को िी अप्तन्तर् चरर् सुख र्ान लेने र्ें िर् अपनी इप्तियों ंके गुलार् बन जाते िैं।

कुत्ता िड्डी चबाता ि तो र्ुँि से खून शनकलने लगता ि। इस रि के स्वाद को वि िड्डी का स्वाद सर्झने लगता ि। कोई उसके सर्ीप जाये तो वि डर जाता ि। यि सर्झ कर, किीं ंयि सुख उससे शछन न जाये; वि ड्डी ले कर दौड पडता ि। र्ानव-र्न का व्यविार भी ऐसा िी ि।" इस िकार डाक्टर सािब उच्च, र्ित्त्वपूणम नैशतक शिक्षाएँ दे कर िेररत शकया करते।

ाक्टिर साहब सन्त महात्मा थे; डजन्होंनें क्रोध पर पे्रेम से, लोभ पर उदारता से, काम-वासना पर आन्तररक शुडचता-पडवत्रता से, अहंकार पर ईश्वर के प्रडत पूित समपति से, बुराई पर भलाई से और भय पर साहस से डवजय पा ली थी। आज के युग में वही अध्यात्म-ज्योडत से ज्योडतत प्रोज्वल स्वामी डशवानन्द-रूप में चहुँओर अपनी करुिा एवं कृपा की डदव्य वृडि कर रहे हैं।

अध्याय ६

डाक्टर र्ि्दय से शबछुडना

र्िरे डाक्टर सिाब का सबके साथ शर्त्रवत् व्यविार था। श्रीलंका र्ें इनके बहुत से शर्त्र थे। चीन, र्लाया और तशर्लनाडु के लोगों ंसे तो काफी शर्त्रता थी। सर्िु पार अपररशचत स्थान-शवदेि र्ें भी इतने अशधक शर्त्र-बन्धु िोना एक असाधारण बात थी। र्लय (Malay) तथा चाइनीज (Chinese) भाषाओं ंर्ें भी शबना अिके बातचीत कर लेते थे; बोलने र्ें धारािवाि रिता। एक शर्त्र की भााँशत डाक्टर सिाब बहुधा र्ुझे अपने साथ आशफस ले जाते और विााँ िाइशपंग शसखाया करते।

जोिोरबािरु एक छोिा-सा नगर, जिााँ का िासक उन शदनों ंर्ुसलर्ान था। सभी डाकशििक एवं पोस्टकाडम पर उसका शचत्र र्ुिंशकत िोता। डाक लेने के शलए अपने िस्ताक्षर करने पडते थे ऐसा शनयर् था। डाक्टर सिाब को जैसे िी डाक शर्लती, उसे पढ़ कर तुरन्त िी उत्तर शलख देते और पोस्ट बाक्स र्ें डालने स्वयं िी जाते। यि कार् दूसरों ंसे करवाने का उनका स्वभाव न था। एक बार र्ैंने पूछ िी शलया - "आप पत्र शलखते भी स्वयं िैं और पोस्ट करने भी खुद िी जाते िैं, ऐसा क्यों? ं" उत्तर र्ें उन्होंनें किा- "एक व्यशि िर्ें पत्र इसशलए शलखता िै शक वि ित्यक्षतिः िर्से बातचीत निीं ंकर सकता। जब िर् स्वयं उत्तर शलख कर अपने िाथ से पोस्ट बाक्स र्ें डालेंगे तो र्ानो उसके िाथ र्ें िर् स्वयं पत्र पकडा रिे िैं। इस तरि दोनों ंका र्ानशसक शर्लन िोता िै और पारस्पररक िेर् र्ें दोनों ंिशवत िो जाते िैं।" ऐसा किते हुए डाक्टर सिाब के चेिरे पर िेर्भाव छलकता दृशष्टगत िो रिा था।

बाजार जा कर खुद खरीददारी करना डाक्टर सिाब को अशधक पसन्द था। दुकानदार से कभी सौदेबाजी न करते, र्ुाँर्िााँगा दार् चुका देते थे। अपना भारी सार्ान कुली से उठवाना उन्िें सह्य न था। सार्ान के भारी बैग स्वयं िी उठाया करते। एक शदन उनके साथ बाजार चलने का र्ैंने अनुरोध शकया। स्वीकृशत शर्लने पर र्ैं इनके साथ गया; तब र्ैंने ध्यान शदया शक दुकानदार शजतना र्ूल्य बताते, उतना िी देने को तैयार रिते। उत्सुकतावि र्ैंने पूछा- "क्या यि उशचत िै शक आप दुकानदार को र्ुाँर्िााँगा दार् चुका देते िैं, र्ोल-भाव निीं ं करते ?"

डाक्टर सिाब ने उत्तर शदया- "ग्रािक के स्वभाव को ध्यान र्ें रखते हुए िी दुकानदार दार् र्ााँगते िैं। यशद एक बार उनकी र्ााँग के अनुसार (र्ूल्य) कीर्त चुकता कर जाये तो वि पररशचत िो जाते िैं शक सौदेबाजी करना

आपका स्वभाव निीं;ं तो भशवष् र्ें वि उशचत रूल्य की िी र्ााँग करेंगे। अपने साथ ऐसा िी िोते देखा, यि र्ेरा अनुभव िै।"

डाक्टर सिाब को वेदान्त का ज्ञान सम्यक् रूप से था तथा शसद्धान्त से भी पूणमतया पररशचत थे। िैव र्त और वैष्णव र्त को भली िकार जानते थे। शनष्कार् कर्म, भप्ति, ज्ञान और योग के सार्ंजस्य पर बल देते थे। इनके 'सर्िय योग' र्ें शवलक्षणता थी।

एक अाँग्रेज डाक्टर ग्रीन के अधीन डाक्टर सिाब ने कायम शकया था। उस सर्य ये अपने डाक्टरी पेिे के अनुरूप पाश्चात्य विेभूषा पिना करते थे। इंप्डि से यद्यशप इन्िोंने अनेक उपाशधयााँ एवं पुरस्कार िाप्त शकये थे, तथाशप पशश्चर् के तौरतरीके निीं ंअपनाये। इनकी जीवनिैली भारतीय िी रिी। शबना चूके अपने शनत्य-कर्म-अनुिान इत्याशद वैशदक-शवशध- शवधान-अनुसार िी सम्पि करते थे। अपने र्ृदुल-र्धुर व्यविार से सबका र्न रोि लेते थे। सब इनके िशत आकशषमत थे। ये सबके शिय थे अथामत् पिले जो सवमशिय थे आज ये िी शवश्व-शिय िैं। सर्ग्र संसार इनकी पूजा-वन्दना करता िै।

श्रीलंका की यात्रा

श्रीलंका-यात्रािेतु अनुर्शत र्ााँगने पर डाक्टर सिाब ने पिली बार तो र्ुझे र्ना कर शदया था; परनुतु बाद र्ें स्वीकृशत दे दी। िोग्रार् के अनुसार सब िबन्ध कर शलये गये; और इस िकार आप्तखर एक शदन इन र्िान् डाक्टर सिाब से र्ुझे शबछुडना िी पडा। चलने से पिले इन्िोंने र्ेरे िाथ र्ें दो शलफाफे पकडाये। एक र्ें पत्र और दूसरे कवर र्ें रिा-खचम के शलए पैसे (६४ शसल्वर) थे। शजसे देख कर र्ुझे आश्चयम हुआ। उन शदनों ंसर्ुद्री जिाज का शकराया केवल ३० शसल्वर था। र्ैं िैरान था शक ३४ शसल्वर र्ुझे अशधक क्यों ंशदये गये ? दूसरे शलफाफे को खोला तो पत्र देखा, उसे पढ़ने लगा-

जोिोरबािरू, ६-७-१९२२

र्ेरे शिय नरशसंिअय्यर,

आपके िारा की गयी अब तक की सेवा-सिायता को र्ैं कभी भूल निीं ंसकता। जिााँ-जिााँ आप जायें, नरशसंि भगवान् की कृपा आप पर बनी रिे!

र्ुझे पूणम शवश्वास िै शक आप िभु-भप्ति र्ें लगे रिेंगे और गृिस्थ जीवन र्ें एक पत्नी-व्रत का पालन करेंगे।

आपका िुभ-शचन्तक
पी. वी. कुप्पुस्वाशर्

पत्र पढ़ कर उर्डते भावों ंको रोकना कशठन िो गया। कण्ठ अवरुद्ध िो गया। व्याकुल िो सोचने लगा- "इनसे र्ेरा पुनशर्मलन शफर कब िोगा ? अपने स्नेिशिल व्यविार से इन्िोंने िी र्ेरे बन्दर जैसे चंचल र्न को शनयप्तन्त्रत कर रखा था।" जब भी इनके सन्तस्वभावविि करुणापूररत शियाकलाप को र्ैं याद करता, हृदय िवीभूत िो उठता। र्ेरे िशत इनका असीर् िेर् ऐसे रिा जैसे र्र्तार्यी र्ााँ का अपने शििु के िशत िोता िै। एक ज्येि िाता की भााँशत सदा सिायक रूप र्ें शसद्ध हुए। र्ैं इन र्िान् आिा अपने संरक्षक-स्वार्ी (र्ाशलक) से शवदा कैसे ले

पाऊँगा; शजन्होंनें रे्रे र्न को ि्िुद्ध, शनर्मल एवं स्पष्ट शवचारों ्से पररपूणम शकया? इस शबछोि से र्ैं अत्यन्त व्यशथत था।

तभी सिसा डाक्टर सािब र्ुझे अपने सार्ने खडे शदखायी शदये। आँसू-भरी आँखों ्को देख कर रे्री र्ानशसक वेदना को भााँप गये, रे्रे र्नोभावों ्को स्पष्टतिः जान गये। र्ुझे धीरज बाँधाते हुए किने लगे-"आप इतने शवकल क्यों ्िो रिे िैं! यि भ्रर् अपने र्न से शनकाल दें शक िर् सदा के शलए शबछुड रिे िैं। ज्ञानालोक की देवभूशर् र्ें िर्ारा पुनशर्मलन िोगा। िर्ें यि सर्झना िै शक र्ानव-जीवन का ियोजन क्या िै? आशदगुरु ि्ंकराचायम के शवचारानुसार र्ानव-जन्म दुलमभ िै, पुरुष रूप र्ें जन्म तो अशत दुलमभ िै। वेदान्त का अध्ययन तथा िास्त्रों ्का ज्ञान िाप्ति करना सार्ान्य बात निीं,् असार्ान्य िै। शववेक िारा आत्म और अनात्म तत्त्व का भेद जानना तो असाधारण िी िै, बहुत दुलमभ िै। पूवम-जन्म के सुकृतों ्के कारण िी आत्मबोध सम्भव िै। र्ानव-जन्म शर्लने पर भी इन सबकी जो अविेलना करता िै, उसकी दिा तो अत्यन्त िोचनीय िै। र्ानव-जीवन का लक्ष्य िै–भुि–िाप्तप्त, भगवद्-साक्षात्कार, आत्म-साक्षात्कार। उपयुि सर्य पर आपको सब सर्ुशचत ज्ञान की जानकारी िो जायेगी।"

शितशदन की अपेक्षा उस िार् को िर्ने राशत्र-भोजन जल्दी कर शलया था। कोलालम्पुर से जोिोरबािरु रेलगाडी के पहुँचने का सर्य िार् को ४.३० बजे था। शफर यात्री जिाज के िारा ४-५ शकलोर्ीटर सर्ुि पार कर आधे र्ण्टे र्ें दूसरे शकनारे तक पहुँच जाते। विााँ शसंगापुर के शलए एक िेन सवाररयों ्की ितीक्षा करती, जो याशत्रयों ् को सायं ६ बजे गन्तव्य स्थान पर पहुंचा देती। शसंगापुर से जोिोरबािरु की यात्रा का र्ागम भी इसी िकार िै। डाक्टर सािब के सेवक ने रे्रा सार्ान तथा शबस्तर उठाया। डाक्टर सािब तथा इनके आशफस के र्ैनेजर श्रीराजर् रे्रे साथ चले। शर्स्टर राजर् िैव धर्म के अनुयायी थे, यद्यशप वि कुछ सर्य से ईसाई धर्म का पालन कर रिे थे। वि बहुत िान्त िवृशत्त के व्यप्ति थे, वैशदक धर्म-ग्रन्थों ्र्ें शवश्वास रखने वाले थे। पौराशणक स्वशणमर् पवमत र्िार्ेरु से सम्बद्ध एक कौवा भी स्वशणमर् छशव का िो जाता िै; इसी िकार **हमारे महान् िाक्टर साहब के सम्पकत में आने वाले व्यक्ति भी सद्गुि-युि हो जाते। जैसे डनत्य-डनरन्तर गडतशील समस्त नडदयाँ समुद्र में डवलीन होने पर सागर से ऐक्य प्राप्त कर सागर का ही रूप धारि कर लेती हैं। इस तरह िाक्टर साहब अपने साक्तिक प्रभाव से 'दूसरे' को अपने जैसा बना लेते और डफर एकात्मकता हो जाती।**

डाक्टर सािब सशित िर् चारों ्बन्दरगाि पर पहुँच गये। डाक्टर सािब ने र्ुझे शितीय श्रेणी का शटशकट पकडाया जो उन्होंनें पिले से िी खरीद शलया था। शर्स्टर राजर् शसंगापुर रिते थे जो जोिोरबािरु िशतशदन आया-जाया करते थे। इनके पास सीजन शटशकट था। वि और र्ैं जिाज पर बैठ गये। जैसे िी जिाज छूटने को हुआ र्ैं अत्यन्त शवकल िो उठा। रे्रा हृदय इतना व्यशथत हुआ जैसे शक भगवान् श्री रार् जी से शबछुडते सर्य भरत जी का हुआ था। यि शबछोि अत्यन्त पीडादायक था। शवदा देते हुए डाक्टर सािब ने किा- "जिााँ-किीं ्भी आप जायें, र्ुझे पत्र शलखना भूलें निीं।्" जैसे िी इनका यि वाक्य सर्ाप्त हुआ, जिाज चल पडा। इस िकार रे्रा डाक्टर सािब से शबछुडना हुआ। इन र्िान् आत्मा से शबछुडने की पीडा को िब्दों ्र्ें कदाशप अशभव्यि निीं ्शकया जा सकता, बहुत ियास करने पर भी निीं।् उस दुिःख-ददम, वेदना-व्यथा के बारे र्ें अब भी कुछ शलखने र्ें असर्थम हाँ।

रे्रे सियात्री श्री राजर् रे्री र्ानशसक पीडादायी व्याकुलता को अच्छी तरि से सर्झ गये थे। उन्होंनें सान्त्वना देने का ियत्न शकया; परन्तु इनके िब्द र्ुझे धीरज न बाँधा सके।

िर् शसंगापुर पहुँच गये। पररप्तस्थशत-वि र्ैं आगे न जा सका और एक र्िीने तक विीं ्रुकना पडा। रोज िार् को सैर के सर्य शर्स्टर राजर् के र्कान जा कर थोडी बातचीत कर लेता।

इस अवशध के दौरान ज्ञात हुआ शक डाक्टर सािब को अपने र्कान र्ें श्राद्ध कर्म करना िै। शसंगापुर र्ें डा. रर्ुनाथ अय्यर से इस कायम को सम्पन्न करने के शलए एक पप्तण्डत और दो ब्राह्मण भेजने का डाक्टर कुप्पुस्वाशर् ने

अनुरोध शकया था। पप्तण्डत तो शर्ला; पर ब्राह्मण न शर्लने पर वे लोग रे्रे पास आये। जोिोरबारु डाक्टर कुपुपुस्वाशर् के र् जाने के शलए रै्ंने सिषम सिर्शत दे दी। रे्रे अपने जीवन रे् बिार किीं ंजा कर श्राद्ध का भोजन खाने की स्वीकृशत देने का यि रे्रा पिला अवसर था। क्योंशंक यि अपने डाक्टर सिाब के र् जाने की बात थी, रै्ंने खुिी से र्ान ली।

अगली सुबि िर् दोनों ंजोिोरबारु के शलए रवाना हुए। सर्य पर विााँ पहुाँच गये। बन्दरगाि से डाक्टर सिाब का शनवास-स्थान स्पष्ट शदखायी देता था। िर्ें जिाज से उतरते उन्िोंनें देख शलया। िर्ें जान शलया शक उत्सुकतापूवमक िर्ारी ितीक्षा की जा रिी िै। उन्िोंनें िर्ें देखा तो जरूर; परन्तु यि निीं ंजान पाये शक र्ैं भी इनके र् आ रिा हाँ। जैसे िी र्ुझे देखा, बहुत िसि िो गये। रे्री कुिलक्षेर् पूछने लगे। शफर बोले- "आज के श्राद्ध कर्म पूणम करने र्ें थोडी अडचन आ गयी िै। कारणवि अिुप्तद्ध लग जाने के कारण रसोइया आ कर भोजन बनाने र्ें असर्थम िै। इसशलए भोजन की खाद्य-सार्ग्री तथा दशक्षणा दे कर श्राद्धकर्म सम्पि कर शलया जायेगा शजससे आप लोग भी िीघ्र िी शसंगापुर लौि सकेंगे। इस असुशवधा के शलए र्ुझे क्षर्ा करें।" रै्ंने किा- "श्रीर्न्! आप क्यों ंइतनी शचन्ता कर रिे िैं? िर् दो लोग आपके सार्ने उपप्तस्थत िैं। एक र्ण्टे र्ें सब भोजन तैयार िो जायेगा। सूखी सार्ग्री दे कर श्राद्ध-कर्म पूणम करने की बात शदर्ाग से शनकाल दीशजए। ऐसा सोचने की कोई आवश्यकता निीं।ं" सुन कर डाक्टर सिाब बहुत खुि िो गये और किने लगे-"आज के कायम र्ें आयी बाधा-शनवारण िेतु िी ईश्वर ने आप दोनों ंको यिााँ भेजा िै।"

पप्तण्डत जी और रै्ंने खाना पकाना तुरन्त िुरू कर शदया; अि सर्य र्ें िी आवश्यक भोजन-सार्ग्री तैयार कर ली गयी। तब श्राद्ध शिया कर्म िारम्भ हुआ। इस संस्कार र्ें सार्ान्यतया दशक्षणा र्ें दो रुपये अथवा दो शसल्वर शदये जाते थे; लेशकन डाक्टर सिाब ने तो दोनों ंको दस-दस शसल्वर शदये। देख कर र्ैं चशकत रि गया। यात्रा-खचम के शलए पााँच-पााँच शसल्वर दोनों ंको अलग से शदये और नतर्स्तक िो आदरपूवमक नर्स्कार कर िर्ें शवदा दी।

शसंगापुर लौिते सर्य रास्ते-भर िर् डाक्टर सिाब की दानिीलता, हृदय की उदारता पर आश्चयमचशकत िो, चचाम करते रिे। श्री रार्कृष्ण परर्िंस शर्ट्टी और स्वणम को सर्ान सर्झते थे-दोनों र्ें कोई अन्तर न र्ानते थे। र्िारे डाक्टर सिाब भी धन को कोई अशधक र्ित्त्व न देते थे। धन-संचय र्ें कोई आकषमण न था। शजतना अशधक िो, परोपकार र्ें िी खचम करते। कुछ व्यप्ति वेदान्त पर िवचन तो लम्बे-चौडे देते िैं; परन्तु एक कौवा पक्षी को अपना बचा भोजनांि तक निीं ंप्तखला सकते। िर्ारे डाक्टर सिाब िुष्क वेदान्ती निीं, ं इनका हृदय तो सदैव करुणा से आप्लाशवत रिता।

लाडम जीसस िाइस्ट के एक शिय शिष् थे जॉन, शजसने िाइस्ट के शवषय र्ें गौस्पल (Gospel) शलखा था। इनके र्न र्ें अपने उस शिष् जॉन के िशत शविेष िेर् था; क्योंशंक वि शिष् अपने गुरु के आज्ञा-पालन र्ें सदा तत्पर रिता। एक बार फाररसी (Pharisee) ने जॉन से पूछा- "तुम्हारे गुरु भले-बुरे का ध्यान न रखते हुए सबके साथ शर्ल कर भोजन क्यों ंकरते िैं?" जीसस ने दूर से सुन शलया था। संकेत से िेर्पूवमक उसे पुकारते हुए बोले- "एक स्वस्थ व्यप्ति को डाक्टर की इतनी जरूरत निीं ंपडती, अस्वस्थ को शनश्चयतः उपचार की अशधक आवश्यकता िोती िै। र्ैं यिााँ उनकी सिायता करने निीं ंआया जो भले िैं, बप्ति पाशपयों ंको पाप से बचाने िेतु यिााँ आया हाँ।"

र्िारे डाक्टर सिाब का करुणापूणम सेर्िशसि व्यविार ऐसा िी था। दीनिीन, दररि को देख कर हृदय शिवत िो उठता; उनसे िेर्पूणम वतामव रखते। एवं रोशगयों ंकी अथक सेवा करते। ऐसे र्िान् पुरुष से शवलग िोना वास्तव र्ें पीडादायक था। पूरे रास्ते शचन्तन र्ें, परस्पर बात करने र्ें सर्य का पता िी न चला। जोिोरबारु को

पीछे छोड िर् शसंगापुर पहुाँच गये।। विााँ से सात (७) शदन के बाद जिाज से कोलम्बो गया। विााँ पहुाँच कर र्ैंने डाक्टर सिाब को दो पत्र शलखे थे।

अध्याय ७
पुनशर्मलन : आनन्द कुिीर र्ें

श्रीलंका-यात्रा-िेतु र्ुझे डाक्टर कुप्पुस्वाशर् की शनजी सेवा-सौभाग्य से वंशचत िोना पडा था। उनसे शबछुडने के पश्चात् र्ेरा कुछ सर्य कशदरकार्र् र्ें भगवान् श्री काशतमकेय जी के पावन र्शन्दर र्ें व्यतीत हुआ। शफर र्ैं चैि चला गया और अपने व्यवसाय इत्याशद कायम-कलापों र्ें व्यस्त िो गया। विााँ से डाक्टर सिाब के साथ पत्र-व्यविार जारी रिा। अकस्मात् पत्र आने बन्द िो गये, शजससे र्ेरा र्न शोकाकुल िो उठा। जीवन िून्यता से भर गया; वेदना शदन ब शदन बढ़ती गयी। व्यथापूणम र्ेरी दयनीय दिा उस सुरीली वीणा जैसी थी, शजसके सब तार अब ढीले पड गये िों, अथवा उस शनरीि शििु के सर्ान जो अपनी र्ाता से शवलग िो कर शबलख रिा िो। र्ुझे कुछ सर्झ निीं आ रिा था शक अब क्या शकया जाये? किााँ से, शकससे और कैसे डाक्टर सिाब की जानकारी िाप्त की जा सके ? जैसे भी िो; अन्तर्ुमखी िो र्ैं ध्यानस्थ अवस्था र्ें डाक्टर सिाब का दिमन करने र्ें सफल िो
सका। काफी धीरज शर्ला। शफर भी ित्यक्ष झलक पाने को र्न आतुर िो उठा। इसी िोक-व्यथा र्ें शकतने िी वषम व्यतीत िो गये।

चैि र्ें शनवास करते हुए सन् १९३५ र्ें एक र्ाशसक पशत्रका 'र्ाइ र्ैगजीन' (My Magazine) र्ें गुरुदेव स्वार्ी शिवानन्द जी के शवषय र्ें कुछ जानकारी िाप्त हुई। इनके सर्पूणम त्याग-वैराग्य-संन्यास और आत्म-साक्षात्कार-िाप्त जीवन की र्ित्वपूणम र्टनाओं का उल्लेख शर्ला। ऋशषकेि र्ें गंगा-पार स्वगामश्रर् की एक कुशटया र्ें शनवास का पता चला। र्लेशिया-वास के सर्य के अपने पुराने सम्बन्धों का स्मरण शदलाते हुए र्ैंने इन्िें एक पत्र शलखा। तुरन्त िी उपदेिात्मक शिक्षािद कुछ पुस्तकाओं सशित पत्रोत्तर िाप्त कर धैयम शर्ला। र्ेरी र्नस्स्थशत उस शदिा-भ्रष्ट जिाज के सर्ान थी, शजसे अचानक िी अपने शनशदमष्ट र्ागम-दिमन िेतु िकाि-स्तम्भ से थोडी रोिनी शदखायी दे रिी िो।

जैसे-जैसे सर्य बीतता गया, ऋशषकेि जाने की इच्छा बलवती िोती गयी। जीवन की र्ात्र यिी एक अशभलाषा बन गयी। एक नदी अनेक र्ाशियों, खाइयों, जंगलों-पवमतों को पार करती, तीव्र वेग से बिती चली आती िै, लेशकन र्ैदानों र्ें आ कर िान्त तथा धीर्ी गशत से िवाशित िोने लगती िै, इसी िकार र्ैंने जीवन के शकतने िी खट्टे-र्ीठे अनुभव िाप्त कर, अनेक उतार-चढ़ाव, सुख-दुःख को सिन शकया उन सबके बीच से गुजरते हुए अन्ततः अपना शनशदमष्ट पथ पाने र्ें अथामत् ऋशषकेि जाने का शनश्चय कर पाने से र्ैं थोडा िान्त हुआ।

चि रें र्यलापुर रिते हुए सन् १९४१ के फरवरी र्ास रें अपने श्रद्धास्पद गुरुवर स्वारी् शिवानन्द जी र्िराज से शर्लने ऋशषकेि जाने का शनणमय कर शलया। शकसी को सूशचत शकये शबना, र्र से िररिार की ओर शनकल पडा। रास्ेते रें कलकत्ता, कािी तथा अयोध्या रें दिमन करते हुए िररिार पहुँचा। विााँ पुनीत गंगा जी रें स्नान शकया तथा र्तन्दरों के दिमन कर बस से ऋशषकेि के शलए रवाना हुआ। अपराह्न ३ बजे श्री गुरुदेव के शनवास-स्थान आनन्द कुिीर रें पहुँच गया। रुझे पता चला शक सायं ५ बजे िी दिमन सम्भव िैं। आतुरता से िितीक्षा करने लगा।

सायंकाल िोने वाला था। सूयम देवता शवदा लेते हुए र्ानो िर्से कि रिे िों–"कल िातः रेरे उशदत िोने तक शिवानन्द-रूपी सूयम का िकाि िी सरूचे संसार को िकाशित करता रिेगा।" अि क्षणों रें िी रैंने गुरुदेव के तेजोर्य शदव्य स्वरूप को अपने सर्क्ष ित्यक्ष पाया। अपने आध्याप्तिक सद्गुरु के िोर्ारी दिमन शकये। इनके शदव्य दिमनों ने अशभभूत कर शदया। रैं तो स्तब्ध िी रि गया। इनके व्यप्तित्व रें अद्भुत रूपान्तरण ! एक िी व्यप्ति के दो रूप-शवलक्षण। अतुलनीय। अवणमनीय। एक वि रूप शजसे इनके पूवामश्रर् रें देखा था। दूसरा-वतमर्ान सर्य रें एक र्िान् शविाल शदव्य देिधारी आकषमक स्वरूप-नेत्रों के सार्ने दिमनीय!

पाश्चात्य वेिभूषा, व्यविार-वैशचत्र्य आशद से िच्छि इनका पूवामश्रर् का एक व्यप्तित्व और अब सर्क्ष िै-पशवत्र गेरुआ वस्त्रों से िदीप्त काप्तन्तर्ान एक शवशिष्ट व्यप्तित्व रेरे आराध्य सद्गुरु के रूप रें। कािी से लायी हुई श्री गौरीिंकर भगवान् की िशतर्ा और रुिाक्ष की र्ाला रैंने आदर सशित सर्शपमत की। इस भेंट को इन्ोंने िर् भाव से स्वीकार शकया। रैंने इनके चरण-कर्लों को पकड शलया और रुद्ध कण्ठ से हृदय के भावों को व्यि शकया-

"स्वारी् जी! लेंशिया रें आपने इस दीन-िीन अशंकंचन सेवक को कुछ वचन शदया था, अब कृपया उसे पूणम करेंगे न?"

गुरुदेव रेरी बात को जैसे एकदर् पूरी तरि से सर्झ निीं पाये। कुछ देर तक सोचते रिे। शवनयपूवमक धीरे-धीरे रैंने पुरानी र्धुर स्ृमशतयों की याद शदला कर सजीव बनाया। शफर तो ये सब-कुछ सर्झ गये और िसि िी कर रेरे पररवार की कुिलक्ेषेर् पूछने लगे। र्धुर रुस्कान सशित गुरुदेव ने किा- "आपको इतनी जल्दबाजी क्या िै? कुछ सर्य और बीत जाने दें। सब-कुछ अपने सर्ुशचत सर्य पर िी शर्शत िोता िै।" कुछ शदनों के शलए आनन्द कुिीर रें ठिरने का आदेि शदया तो रैं यिााँ रुक गया।

गुरुदेव स्वारी् शिवानन्द जी की शविेष कृपा

एक शदन अपने कर्रे रें बैठे हुए रैं पुस्तक पढ़ रिा था। पीछे से र्ीठी ध्वशन सुनायी दी-"आप देवियाग की यात्रा के शलए िस्थान करें। विााँ रार्नवर्ी के शदन र्तन्दर रें श्री रार् भगवान् के दिमन कर सकते िैं। पंजाब से आये एक भि आपके साथ जायेंगे।" पीछे र्ुडा तो गुरुदेव को कर्रे रें िशवष्ट िोते देखा, अपनी पुस्तक को तुरन्त नीचे रख कर इनके श्रीचरणों रें िणत िो बोला - "आपके िर्पूणम वचनों का शनशश्चत रूप से पालन िोगा।" आिीवामद देते हुए गुरुदेव ने किा- **"रास्ेते में आने वाली डवघ्न-बाधाओं से घबरा कर हतोत्साडहत नहीं होना। अन्त में सब भला ही होगा।" सन् १९४९ के माचत महीने की यह घटना है।**

उसी शदन दोपिर लगभग तीन बजे पंजाबी सिन रेरे पास आ कर किने लगे-"श्रीस्वारी् जी के शनदेिानुसार क्या िर् देवियाग की यात्रा आरम्भ कर सकते िैं?" रेरी सम्मशत पा कर चलने लगे तो रुझे पैरों रें जूते पिनने के शलए किा। रैंने उत्तर शदया- "अपने जूते तो रैंने शकसी दूसरे व्यप्ति को दे शदये िैं।" उन्ोंने शफर

श्नि शकया- "शकसे दे शदये ?" उत्तर र्ें रैंने किा- "रंगून से गुरुदेव के एक भि आये थे। भूल से उनके जूते िररीर र्ें रि गये। यिााँ की भीषण गर्ी के वि अभ्यस्त न थे, उनके शलए असह्य थी। ऐसी िालत देख अपने जूते उन्ें
पिनने को दे शदये।"

इस िकार बातचीत करते हुए िर् चल शदये। ऋशषकेि से देवियाग की दूरी ४४ र्ील िै। सुबि की एक
िी बिस थी जो िातिः १० बजे चल कर देवियाग से पुनिः िार् को वापस यिााँ पहुाँचती। वि बस तो छूि चुकी थी। पैदल चलना िुरू शकया। देवियाग जाने के दो रास्ते िैं; एक बस इत्याशद वािन का, दूसरा पैदल चलने वालों ंका। बस रूि पर आधे रास्ते के बाद धर्मिाला तथा दुकानें िैं। पदयाशत्रयों ंके रास्ते र्ें िर पााँच र्ील के फासले पर पडाव िैं जो 'चट्टी' किलाते िैं। ऐसी िी एक चट्टी पर िर्ने राशत्र-शवश्रार् शकया। सुबि आगे की ओर बढ़े। दोपिर एक चट्टी पर रुके वािााँ खाने र्ें दाल-चावल शर्ले जो पूरी तरि पके हुए न थे। ऐसा भोजन करने के बाद पिाड की पैदल यात्रा असम्भव सी लगने लगी। शफर भी चढ़ाई िुरू की। पुनिः राशत्र एक चट्टी पर शवश्रार् शकया। सुबि उठने पर रैंने ध्यान शदया शक पैर सूज गये िैं। अब तक िर् केवल आधा रास्ता िी तय कर पाये थे। उस स्वादिीन, नीरस और अधपके भोजन को खा कर िरीर शिशथि िो गया था। सूयम का िचण्ड ताप। रास्ते के कंकड-पत्थर पैरों ंको जख्मी कर रिे थे। िरीर र्ें कर्जोरी और साथ िी थकावि भी। चलते-चलते रैं िााँफने लगा था। इस तरि की अिांकायिु बेचैनी की िालत र्ें रैंने ऋशषकेि वापस लौिने का शवचार बना शलया; परन्तु र्न को भी सर्झाना िुरू शकया-

"उद्यर्पूवमक आगे की ओर िियाण करो। शिम्मत से गन्तव्य (स्थान) पर पहुाँचने से गंगा-स्नान कर सकेंगे
और श्री रार् जी के दिमन का लाभ भी िाप्त कर पायेंगे। वाशपस लौिने के शलए भी तो उतनी िी दूरी पुनिः तय करनी पडेगी।..." इस िकार रैं दुशवधा-ग्रस्त था। कोई सर्ाधान निीं ंशर्ल पा रिा था।

र्ेरे साथी ने र्ेरी कष्टपूणम दिा को देखा तो बोले-"आप धीरे-धीरे चलो। रैं अपनी चाल से चल कर कुछ
िी दूरी पर आगे जा कर ितीक्षा करूाँगा। आपके पहुाँच जाने पर पुनिः आगे चलना िुरू करेंगे।" दृढ़ शनश्चयी िो, सोत्सािा रैं चलने लगा। िरीर र्ें भले िी थकान थी परन्तु र्न र्ें उत्सािा। अन्तस र्ें दृढ़ शनश्चयी िोने पर बािरी बाधाओं ंसे जैसे रैं रुिु िो गया। आगे बढ़ते रिने के शलए रैं कृत संकि था। िााँ, स्वयं से रैंने िशतज्ञा कर ली थी- “आगे चढ़ पाने र्ें सफल िो गया तो गंगा-स्नान तथा र्न्दिर र्ें जा कर श्री रार् भगवान् के दिमनों ंका आनन्द िाप्त िोगा। अगर असफल रिा तो यिीं ंगंगा रैया की गोद र्ें सर्ा जाऊाँगा।" अब तक रैं शििि एवं क्लान्त िो गया था। उसी सर्य नीचे गंगा जी र्ें एक र्ृत दिे (िव) को तैरते हुए देखा। करािते-शवलखते रैं शचल्ला उठा-"िे िव ! रुक जाओ। थोडी देर र्ेरी इन्तजार करो, रैं भी आ रिा हाँ। तुम्हारे साथ एक जीशवत दिे भी चलेगी। दोनों ंइकट्ठे आगे बढ़ेंगे।”

अिौं भरते हुए शफर रैं भगवान् रार् जी को पुकारने लगा-"िे रार् भगवान्। थकािारा एक दुिखयारा
आपके दिमन की अशभलाषा शलये आ रिा िै। क्या र्ेरी परीक्षा अब तक पूणम निीं ंहुई? बहुत परीक्षा ले ली आपने। र्ेरी सिनि्प्ति अब सर्ाप्त िो गयी िै। क्या यिी इच्छा िै आपकी? अगर रैं अपने संकि से आया िोता तो आपकी यि परीक्षा न्यायसंगत भी िोती; शकन्तु रैं तो अपने गुरुदेव स्वार्ी शिवानन्द जी के आदिे का पालन करते हुए यिााँ आया हाँ। गुरुदेव आि-ज्योशत िैं। र्ाया-जाल र्ें फाँसे िाशणयों ंके अज्ञान-शनवारक िैं, ज्ञानि्दायक िैं। दयाशनधान देदीप्यर्ान िकाि-पुंज गुरुदेव के आिीष िाप्त करके चला हाँ। अगर इन र्िान् सन्त के आिीवामद भािीन िो गये तो इसका अशभिाय यि हुआ शक जगत् र्ें दैवी िि्प्ति का िास िो गया िै।" इस तरि िलाप करते रैं रोने लगा।

शफर रैंने अपने गुरुदेव स्वार्ी शिवानन्द जी का ध्यान-शचन्तन िारम्भ कर शदया। “जो दूसरों ंके सुख-दुिःख को अपना सुख-दुिःख र्ानते िैं; तन-र्न-धन से र्ानवता की सेवा की िपथ शलये िैं, कार्ि्ोध आशद सभी र्ाया-

रूपों ंपर शवजय िाप्त शकये हुए िैं, जो पूणम ब्रह्मचयम एवं धर्मपरायणता की साकार रूशतम िैं; यिी कशलयुग के भगवान् िैं। परोपकार तो इनका सवोत्तृकृष्ट गुण िै। एक वृक्ष के पास जैसे कोई व्यप्ति फल तोडने की इच्छा ले कर या उसे
किाने की बुरी भावना ले कर आते िैं; परनुतु वृक्ष तब भी बदले की भावना न रख कर फल दे कर उसका उपकार िी करता िै, उसे अपनी छाया भी िदान करता िै। इसी भााँशत गुरुदेव सवमश्रेिे ब्रह्मज्ञानी िोते हुए भी परोपकारी िैं,
सर्दिी िैं। बुराई का बदला भलाई से देते िैं। अपनी असीर् करुणा से िरेक को अध्यािशवद्याि–ाप्तप्ति–ितु पथ िस्ति करते िैं। ऐसे रिान् शदव्य सन्त के अिीवमचन क्या अथमिीन शसद्ध िोंगें।" अपने-आपसे इस िकार बातें [illegible] बजे थे।
रिानुभाव र्स्तक पर शतलक लगाये हुए, कन्धे पर एक बंडल उठाये सार्ने खडे शदखायी शदये। वात्सल्यर्यी र्ााँ की भााँशत संवेदना िकि करते हुए र्ुझसे पूछा- "तुर् शकस स्थान के रिने वाले िो? किााँ से आये िो? शकधर जा रिे िो?" र्ैंने उत्तर शदया- "र्ैं दशक्षण भारत का रिने वाला हाँ, ऋशषकेि से गुरुदेव स्वार्ी शिवानन्द जी से देवियाग की यात्रा का आदेि पा कर यिााँ आया हाँ।" सुन कर वि रिानुभाव बोले-"आप बडे सौभाग्यिाली िैं जो उनकी आज्ञा-पालन ितेु देवियाग की यात्रा पर आये िैं। वि एक रिान् योगी तथा दूरदिी सन्त िैं। यथाथमतः र्ैं उन्िीं ंसे शर्लने ऋशषकेि जा रिा हाँ। देवियाग से चलने की जब र्ैं तैयारी कर रिा था तो एक संन्यासी र्ििात्र्ा ने र्ेरे पास आ कर किा- "रास्ते र्ें तुर् एक दशक्षण भारतीय व्यप्ति से शर्लोगे जो स्वार्ी शिवानन्द जी के आदेिानुसार देवियाग की यात्रा पर िै। उसके पैरों ंर्ें जूते निीं ंिैं, यि स्लीपर उसे दे देना।" ऐसा किते हुए उन रिानुभाव ने र्ुझे जूते का एक जोडा देते हुए किा- "श्रीर्ान्! इसे स्वीकार करें।" जैसे िी स्लीपर पिने, र्ैं अचप्तम्भत हुआ, नाप शबलकुल ठीक था जैसे इन्िीं ंपैरों ंके शलए िी बने िों।ं साइज एकदर् सिी। आश्चयमचशकत िो कर र्ैं सोचने लगा-र्ेरे शलए शकसने यि जोडा शदया िोगा ? आप्तखर शकसने ? र्ुझे ऐसी अनुभूशत िोने लगी शक गुरुदेव की र्िती कृपा से िी यि सब रिा िै। नये जूते खरीदने की िेरणा भी गुरुदेव ने िी दी िोगी। र्िाभािीष िाप्तप्त ितेु र्ें उनके चरणों ंर्ें झुक गया। र्ेरी थकावि गायब; कर्जोरी ऐसे काफूर िो गयी जैसे सूयोदय के साथ िातः ओस की बूाँदें शवलुप्त िो जाती िैं। जैसे जन्मजात अन्धे को अकस्मात् नेत्र-ज्योशत िाप्त िो जाये; शनधमन-दररि को सिसा िी एकाएक धनराशि शर्ल जाय; गोवत्स को बन्धन से छूिते िी अपनी र्ााँ शर्ल जाये,पंगु को अचानक चलने की सार्थ्यम िाप्त िो जाये, ऐसे िी बहुत खुि था बिेद िसन्न। उनके पशवत्र चरणों ंकी र्ैंने पूजा की।

भावपूणम हृदय र्ें र्ैं पुकार उठा-'िे र्ेरे गुरुदेव! र्ैं आपकी करुणा और अशतिय िेर् का ऋण कैसे चुका सकता हाँ। र्ैं आपका अत्यन्त आभारी हाँ। आपको भेंि करने योग्य र्ेरे पास कुछ निीं ंिै।" र्ेरे साथी ने विााँ पहुाँचने या पिले उन रिानुभाव को देखा और शफर र्ुझे नये स्लीपर पिने देखा। उन नवागंतुक से पूछा-"आप किााँ से आ रिे िैं ? उन्िोंने िब्दि: पूरी बात शफर से दोिरा दी। पंजाबी सिन ने भी उन्िें िणार् शकया और किा- यि सब गुरुदेव की िी लीला ितीत िोती िै।" भावुक िो रुद्ध कंि से वि बोले-"गुरुदेव शिवानन्द जी की असीर् करुणा और कृपा को िब्दों ंर्ें व्यि निीं ंशकया जा सकता। दशक्षण भारत र्ें जन्मे, शिर्ालय की उपत्यकाओं ंर्ें िविर्ान गंगा के ति पर शनवास करते हुए श्री गुरुदेव देदीप्यर्ान ज्ञान-सूयम िैं।" वि वयोवृद्ध रिानुभाव िर्से शवदा ले कर अपनी रािा चले गये। िर् भी आगे की ओर चल पडे; पीछे र्ुड कर देखा तो विााँ कोई भी निीं ंथा, वि अन्तधामन िो गये। दूर तक किीं ंभी दृशष्टगत न हुए। यि तो रिान् आश्चयम! िभु की अिैतुकी कृपा! उन्िीं ंकी शदव्य लीला थी। सन्त जन कभी-कभी अपनी शसप्तद्धयों ंका ियोग कर अध्याि–प्ति का पररचय दे कर र्ानव-जाशत को कृताथम करते िैं, ताशक र्ानव इस पच पर चलता रिे। सन्त-र्ििात्र्ाओं ंकी सार्थ्यम–प्ति अपररशर्त िोती िै। इन्िीं ंशवचारों ंर्ें खोये हुए िर् शनबामध गशत से शनधडक आगे बढ़ते चले जा रिे थे। राशत्र चट्टी र्ें शबता कर अगले शदन १ बजे दोपिर देवियाग पहुाँच गये।

अगले शदन श्री रार्नवर्ी थी। देवियाग र्ें भागीरथी तथा अलकस्दा का संगर् िोता िै; आगे चल कर वि गंगा जी के रूप र्ें ििविर्ान िोती िैं। विााँ श्री रार् भगवान् का एक िाचीन र्तन्दर िै, शजसकी िशतष्ठा आशदगुरु किराचायम जी ने की थी। र्ान्यता िै शक विााँ श्री रार् जी के दिमन करने र्ात्र से िी सब पाप शवनष्ट िो जाते िैं। पिले िर्ने गंगा-स्नान शकया। र्तन्दर र्ें श्री रार् भगवान् की पूजा-आराधना की। शफर भोजन िसाद खाया। विााँ से लगभग १ बजे दोपिर िर् बस पर बैठे और िार् ७ बजे आनन्द कुिीर वाशपस पहुाँच गये। िर्ें गुरुदेव के दिमन का सौभाग्य िाप्त िो गया। यात्रा के दौरान र्िित सर्स्त अद्भुत र्िनाओं ंका िर्ने उल्लेख शकया तो ित्युत्तर र्ें इन्िोंने किा- **"ईश्वर की डदव्य मडहमा को कोई नहीं ंसमझ सकता। अत्यडधक प्रेम करने वालों ंकी वह परीक्षा लेते हैं, डवपदा-ग्रस्त हो जाने पर प्रेमी भिों ंकी रक्षा भी डफर वही आप ही करते हैं। यह उक्ति 'भगवान् की मजी के डबना एक पिा भी नहीं ंडहल सकता' भला डमथ्या कैसे हो सकती है ? अथात् जो घडटत हुआ सब उनकी ही लीला है।" इस प्रकार से गुरुदेव ने मुझे आशीवातडदत डकया।**

अध्याय ८
श्री सद्गुरुदेव-चरणाशश्रत

श्री गुरुदेव के आदेिानुसार आनन्द कुिीर र्ें लगभग एक र्ास रिने के पश्चात् र्ैंने इनसे चिे जाने की अनुर्शत िाप्त की। विााँ से चेशट्टनाडु गया और करयकुशड र्ें व्यवसाय िुरू शकया। यि स्थान रार्नाथपुरर् एवं बेशट्टनाडु का व्यापाररक केि किलाता िै। र्ेरा शबजनेस छोिा िी था। र्ेरा अन्तर्मन तो पिले से िी गुरुदेव तथा इनके सदुपदेिों ंर्ें शवचारर्ग्न रिता। ऋशषकेि से पशत्रकाएाँ-पुप्तस्तकाएाँ विााँ र्ैं शनयशर्त रूप से िाप्त कर रिा था। र्ेरे पूजा-कक्ष र्ें गुरुदेव का एक शचत्र था। थोडी या बहुत शजतनी भी धन-राशि शदन के िारम्भ र्ें सबसे पिले अशजमत करता, उसे एक छोिे शडबे्बे र्ें एकत्र करता जाता और र्िीने के अन्त र्ें संशचत सम्पूणम राशि ऋशषकेि
भेज देता।

परर् आनन्द की अनुभूशत का िषम-सुख व्यप्ति को सदा-सवमदा पररतृप्त रखता िै। वि अनश्वर िै। कभी भी, शकसी भी क्षण र्ानव इससे अतृप्त निीं ंिोता। दूसरी ओर भौशतक भोग-शवलास के सुख सब क्षण-भंगुर िैं। सदा असन्तोष और अिाप्तन्त देते िैं। शजसने परर् आनन्द की अनुभूशत का शदव्य रस िाप्त कर शलया, उसे सांसाररक भोग-सुख की इच्छा कदाशप निीं ंिोती। र्ैंने जब आनन्द कुिीर र्ें एक र्िा तक शनवास शकया था तब यिााँ तो बारम्बार शदव्यानन्द-सागर र्ें गोते लगाना, पशवत्र गंगा जी र्ें शनत्यर्-शत स्नान करना, इसके पुनीत जल का पान करना, सतत सन्त-र्िािाओं ंकी सशिशध तथा इनकी सेवा-सौभाग्य िाप्त िोना, भगविार् का कीतमन-जप, ध्यान करना एवं योगाभ्यास इत्याशद सब-कुछ करने के बाद भौशतक जगत-कायम-कलापों ंके संसार र्ें पुनिः जीवन-यापन करना र्ेरे शलए शकतना कशठन कायम था। ऐसे वातावरण के बीच रिते हुए र्ेरा तन तो संसार र्ें िी था; परन्तु (सूक्ष्म) र्न आनन्द कुिीर र्ें िी रिता।

अपने गुरुदेव से आप्तखर कब तक र्ैं शवलग रि सकता था! र्ेरे अन्तिःकरण से बार-बार 'ऋशषकेि' जाने का आदेि शर्लने लगा। फलस्वरूप सन् १९४३ की ६ शसतम्बर को र्ैं आनन्द कुिीर पहुाँच िी गया। यिााँ गुरुदेव के जन्मोत्सव का आयोजन था। तदुपरान्त ५ अिूबर को र्ैं गुरुदेव के साथ बम्बई गया। विााँ िर् लोग २३ शदन तक ठिरे। ग्रार्ोफोन ररकाशडिंग के शलए सूटूशडयो र्ें जाते रिे। सूटूशडयो के कलाकारों ंकी संगत एवं सियोग से गुरुदेव ने 'संगीत रार्ायण' का गायन शकया, शजससे ग्रार्ोफोन शडस्क पर ररकाडम शकया गया था। साधारणतया

सुिशसद्ध गायक भी एक शदन रें शडस्क की केवल एक साइड िी ररकाडम करवाने रें सर्थम िोते थे, असाधारण प्तस्थशत रें भले िी शडस्क की दूसरी साइड की ररकाशडिंग करवा लेते। परन्तु िर्ारे गुरुदेव तो अशितीय िैं। शदन रें तीन-तीन शडस्क की दोनों ंसाइड की ररकाशडिंग कराने रें सक्षर् रिे। थकावि का नार् तक निीं।ं सूटूशडयो के स्टाफ-सदस्य तथा संगीत कलाकार भी बहुधा थक के चूर िो जाते थे। उस सर्य गुरुदेव ने सत्तावनवें वषम रें िवेि शकया था। सुगशठत एवं स्थूलकाय। शफर भी ब्रह्मचयम-अभ्यास के अशर्त तेज के िभाव से कभी पररश्रान्त निीं ंशदखायी शदये। थकेर्ााँदे युवा कलाकारों ंएवं सूटूशडयो-कर्मचाररयों ंके र्ध्य गुरुदेव सदैव तेजोर्य ितीत िोते। विााँ सभी इनसे बहुत िभाशवत थे।

कायम पूणम िोने पर िर् आनन्द कुिीर लौिे। यिााँ आ कर रैं लगभग सात र्िीने तक रिा। आिबोध-िाप्तिप्त िेतु सतत साधना रें इसी िकार लगे रिना चािता था, अब रैं इस स्थान को छोडना निीं ंचािता था। लेशकन गुरुदेव ने तो कि शदया- "थोडे शदन और यिााँ रि कर शफर आपने वापस जाना िै। बाद रें पुनिः आ कर यिााँ स्थायीवास कर सकते िैं। तब तक आपकी र्ानशसक अवस्था रें पररपक्वता भी आ जायेगी।"

श्री गुरुदेव के आग्रि-अनुसार इनके श्रीचरणों ंसे शवदा ले कर रैं करैकुडी (Karaikudi) वापस गया। पुदुकोट्टै (Pudukottai) रें नया शबजनेस िुरू शकया। िशतशदन की िथर् धनराशि का संचय एवं र्ास के अन्त रें ऋशषकेि भेजने का पूवामभ्यास जारी रिा।

जैसे इस उप्ति रें वशणमत िै-

जीवन्मुि सदैव पररपूणम र्ौन रें िी रिता
चािे शकसी भी प्तस्थशत रें वि रिे, कर्म कुछ भी वि करे।

रैं यद्यशप व्यापार तथा अन्य सांसाररक कायम-कलापों ंरें व्यस्त रिता था तथाशप अनासप्ति का जीवन िी व्यतीत करता। ररश्तेदार एवं शर्त्र-बन्धु भलीभााँशत सर्झ गये थे शक देर-सवेर रैं इनका त्याग करने वाला हाँ। र्ेरी आिा की प्यास को भला कौन सर्झ पाता ? शकसी को अनुर्ान न था। एक भूखा व्यप्ति िी भोजन की उपयोशगता जान सकता िै। अन्तिःकरण से यिी आवाज आती- "इस संसार रें कौन शकसका सिायक िै? नश्वर िाशणयों ंसे भला क्या अपेक्षा रखी जा सकती िै? र्िान् रिस्यवादी सन्त तायुर्ान के वचनानुसार-र्ाता-शपता, सन्तान इत्याशद सभी सगे-सम्बन्धी तक अपने निीं ंिोते। अध्याि-पथ रें र्ोिासप्ति बडी बाधक िै; यि बुरी तरि र्ाया के फन्दे रें उलझा देती िै। और अन्त रें व्यप्ति को भव-जाल के भाँवर रें फाँसा कर पतन के गतम रें शगरा देती िै।"

शदन बीतते चले गये। कानों ंरें बार-बार 'ऋशषकेि' िब्द गुंशजत िोता। कई बार रैं जाने की पूरी तैयारी भी कर लेता; शफर सोचने लगता निीं,ं अभी निीं।ं आज निीं,ं कल देखेंगे। कभी अगले र्िीने पर िाल देता। यि शसलशसला चलता रिा। कभी शनश्चय करता, कुछ सर्य और बीत जाये, तब तक रैं पूणम त्यागर्य जीवन व्यतीत करने रें सर्थम िो सकूाँगा। र्ोि-भ्रशर्त िाणी यि शवचार निीं ंकर पाता शक िरीर तो शदन ब शदन ढलता जा रिा िै। आप्तखर कर रैंने इस पर गम्भीरतापूवमक शवचार करके पुदुकोट्टै के व्यवसाय को अपने शिय शर्त्र वेंकिाचलर् के संरक्षण रें सौंप शदया।

सन् १९४७ के ई र्ाि रें अपने व्यवसाय इत्याशद भौशतक सर्स्त बन्धनों ंका पूणमतया शवच्छेदन कर ७ ई को ऋशषकेि के शलए िस्थान शकया। १३ ई को आनन्द कुिीर रें पहुाँच कर गुरुदेव का दिमन-सौभाग्य िाप्त हुआ। र्ेरा अन्तस पुकार उठा-"िे भवसागर रें डूबते िाशणयों ंके उद्धारक! जूझने वालों ंको र्ोिासप्ति के त्याग रें

सफलता केवल आपकी कृपा से ि◌ी शर्लती ि◌ै।" रै्ंने इनके पावन श्रीचरणों ◌ंकी पूजा-वन्दना की। इन्ोंनें रु्झे गंगोत्री, यरु्नोत्री, गोरु्ख जाने और विााँ के पुनीत जल रे् स्नान करके अपने को पशवत्र बनाने के शनदेि शदये।

आज्ञानुसार १६ ई १९४७ को यात्रा पर शनकल पडा। ििशिरी तक बस रे् गया। विााँ से यरु्नोत्री के शलए पैदल चलने लगा। शजस रासे्ते पर रै्ंने चलना ि◌ुरू शकया, वि बहुत दुगमर् था। कशतपय लोग ि◌ी उस रासे्ते से जाते; शकनु्तु बिीनाथ की यात्रा सुगर् ि◌ै; क्योंशंक यि केवल पचास र्ील पैदल की यात्रा ि◌ै। जो गंगोत्री-यरु्नोत्री-केदारनाथ की यात्रा कर चुके ि◌ैं, इनके शलए बिीनाथ की यात्रा कशठन निीं ◌ंि◌ोती। यरु्नोत्री का र्ागम भयंकर सदी वाला कष्टकर ि◌ोता ि◌ै। विााँ एक पवमत से गर्म पानी का झरना बिता ि◌ै, जो कुण्ड के रूप रे् इकट्ठा ि◌ो जाता ि◌ै। भर जाने पर पानी कुण्ड के बािर आने लगता ि◌ै। उस पानी रे् सब निाते थे। रै्ंने भी उसी गर्म पानी रे् स्नान शकया।

गंगोत्री के रासे्ते रे् चलते हुए एक शवषैला पत्थर रे्रे पैर रे् चुभ गया और चलना रु्ष्तिल ि◌ो गया। चलने रे् असर्थमता के कारण ििि शदन तक विीं ◌ंरुकना पड गया। शठठुरने वाली सदी की विि से भी चलना कष्टदायक था। उस रासे्ते रे् गरर् पानी किीं ◌ंनिीं ◌ंथा; लेशकन रुकने के शलए कुछ स्थान थे एवं दूध-दिी इत्याशद की कुछ दुकानें उपलब्ध थीं।◌ं

रु्झे पता चला शक अन्य स्थानों ◌ंकी अपेक्षा गोरु्ख की यात्रा सबसे अशधक कष्टकर ि◌ै। बहुत से यात्री तो केवल ३ से ५ र्ील तक ि◌ी चल पाते थे। कुछ लोग शकसी सर्य ७ र्ील तक चल कर आगे की यात्रा रे् असर्थमता पा कर गंगोत्री लिौ आते। सौ रे् से कोई एक ि◌ी यात्री गोरु्ख पहुाँचने रे् सफल ि◌ो पाता। गोरु्ख रे् शवश्रार्-स्थल न िोने से बीच रासे्ते तक लगभग नौ र्ील उतर कर राशत्र-शवश्रार् के शलए आना पडता।

गंगोत्री से गोरु्ख १५ र्ील की दूरी पर ि◌ै। रािा रे् शवश्रार्-गृिों ◌ंके बािर लकशडयों ◌ंके ढेर जलाये जाते ि◌ैं ताशक यात्री लोग अपनी सददी दूर कर गरर्ी पा सकें; ऐसा ि◌बन्ध विााँ शकया जाता ि◌ै। विााँ भोजन अनुपलब्ध ि◌ोने के कारण खाने का कुछ सार्ान अपने साथ ि◌ी ले जाना ि◌ोता ि◌ै। गंगा के बीच रे् तथा शकनारों ◌ंपर जर्ी हुई बफम के पिाड शदखायी देते ि◌ैं। विााँ स्नान करने पर ि◌ाथ-पैर सुि पड जाते ि◌ैं, शफर भी यात्री स्नान करते और पश्चात् कुछ आिार लेते। शफर ९ र्ील नीचे की ओर चलना ि◌ुरू करते। शनकितर् पडाव तक पहुाँचने के शलए रै्ंने भी यिी पररपािी अपनायी।

वापस गंगोत्री पहुाँचा और विााँ से शफर आश्रर् लिौा। सन् १९४७ रे् ८ शसतम्बर को गुरुदेव की ि◌ीरक जयन्ती का भव्य र्िोत्सव बडी धूर्धार् से र्नाया गया। १२ शसतम्बर को कुछ अन्य लोगों ◌ंके साथ रे्री संन्यास दीक्षा हुई। शवरजा ि◌ोर्, शपण्डदान इत्याशद शियाएाँ शवशध-शवधान-पूवमक सम्पि हुईं। रे्रा पुराना नार् 'नरशसंिअय्यर' अप्तस्तत्व शविीन ि◌ो गया और दीक्षा नार् 'स्वार्ी श्रद्धानन्द सरस्वती' शदया गया। र्लेशिया रे् वास करते हुए डाक्टर कुपु्पुस्वाशर् जी से जो सशिक्षाएाँ, सदुपदेि रु्झे ि◌ाप्त हुए थे, उन्ीं ◌ंका ि◌शतफल रु्झे यिााँ पशवत्र भूशर् रे् ले कर आया और इन परर् गुरु के शिष्त्व का सद्सौभाग्य ि◌ाप्त हुआ।

पच्चीस वषम पूवम जब ि◌र् र्लेशिया रे् थे, एक बार रै्ंने डाक्टर कुपु्पुस्वाशर् से शिर्ालय की ओर आने की अनुर्शत र्ााँगते हुए ि◌ाथमना की तो उस सर्य स्वीकार निीं ◌ंहुई। परनु्तु श्रीलंका-यात्रा ि◌ेतु शबछुडते सर्य रै् जब अत्यन्त व्यशथत हुआ तो धीरज बााँधाते हुए डाक्टर सािब ने किा था-"ऋशष-रु्शनयों ◌ंके ज्ञानालोक की भूशर् रे् ि◌र्ारा पुनशर्मलन ि◌ोगा।" वे वचन अब पूणम हुए। र्ानो उस सर्य किे गये वचनों ◌ंका आिय था-

"शिर्ालय की ओर पिले रै् जाऊाँगा, शफर आप सरु्पयुि सर्य पर पहुाँच कर रु्झसे ि◌ी संन्यास ग्रिण करेंगे। यि पूवम शनधामररत ि◌ै तो भला और दूसरा कौन आपको संन्यास दे सकता ि◌ै ?" यि उसी का सूचक ि◌ै जो

उन्होंनें किा था-"भव्य ज्ञान-भूशर् र्ें पुनशर्मलन।" इस िकार ज्ञात िोता िै शक गुरुदेव दूरदिी िैं और दूरदशिमता का यि गुण पूवामश्रर् र्ें भी था।

िक्टिर कुपुपुस्वाडम रूपी एक मेघ ने डदव्य ज्योडत स्वरूप सूयत सम गुरुदेव श्री स्वामी डशवानन्द जी को कुछ समय के डलए आच्छाडदत डकया हुआ था; जैसे ही बादल छुँट गया, अथात् िाक्टर कुपुपुस्वाडम का रूप ओझल हुआ, तो आलोक-पुंज सद्गुरुदेव डशवानन्द जी अब संसार में व्याप्त गहन अज्ञानान्धकार को दूर करते हुए सभी को सवतत्र ब्रह्मज्ञान की डदव्य ज्योडत डवकीत कर रहे हैं।